Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

अनुकम्पा

गाय भैंस आक थोर नों,
ए च्यारूंई दूध।
तिम अनुकम्पा जांणजों,
राखे मन में सूध।।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 01 • 07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 05-10-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

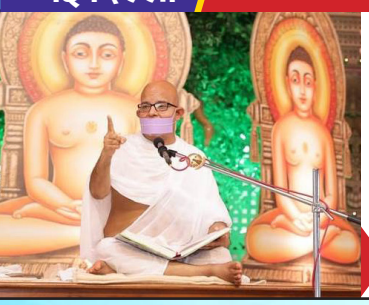

अध्यात्म साधना के लिए छोड़ें परिग्रह की चेतना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

बंधन से मुक्त कराने वाला वीर होता है प्रशंसनीय : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

अध्यात्म की साधना में अहंकार और ममकार होता है त्याज्य : आचार्यश्री महाश्रमण

ध्यानयोगी की सन्निधि में हुआ प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का शुभारम्भ

सूरत।
30 सितम्बर, 2024

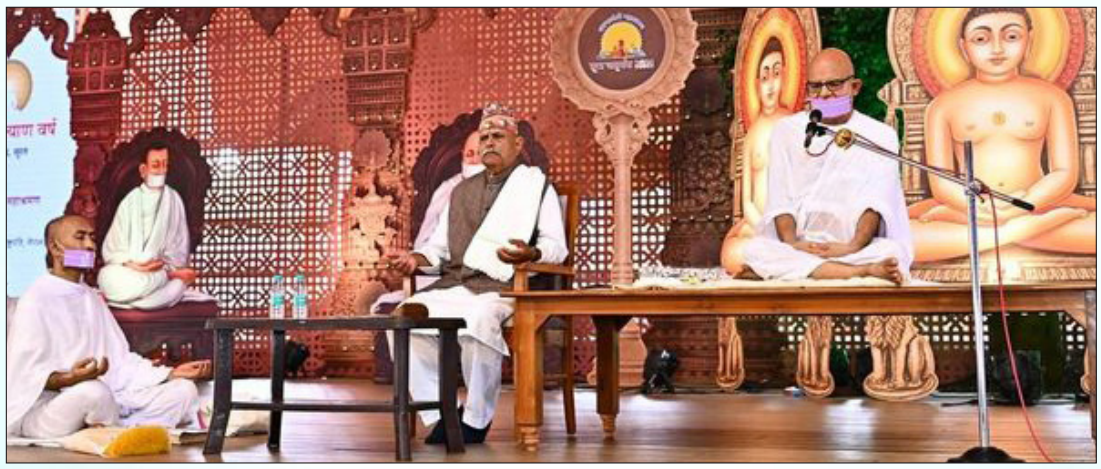

आज से लगभग 49 वर्ष पूर्व सन् 1975 में जयपुर में गुरूदेव तुलसी और मुनि नथमल जी (आचार्य महाप्रज्ञ जी) की सन्निधि में प्रेक्षाध्यान पद्धति का विधिवत शुभारंभ हुआ था। आज ध्यानयोगी आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में आज 50वां वर्ष शुरू होने जा रहा है जो प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के नाम से एक वर्ष तक मनाया जायेगा।

ध्यान साधना के महान आराधक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि आयारो आगम में कहा गया है- अध्यात्म की साधना में शरीर के प्रति ममत्व छोड़ने की बात होती है। पदार्थों से भी ज्यादा ममत्व शायद अपने शरीर के प्रति हो सकता है। अध्यात्म की साधना में अहंकार और ममकार भी त्याज्य होता है। आज प्रेक्षाध्यान का कल्याण वर्ष का प्रारंभ हुआ है। लगभग एक वर्ष की कालावधि है। जयपुर सी-स्कीम के ग्रीन हाउस में आचार्यश्री तुलसी की सन्निधि में इस पद्धति का नामकरण हुआ था - प्रेक्षाध्यान। दुनिया में अनेक नामों से ध्यान पद्धतियां चल रही हैं। हमारे धर्मसंघ में मुनिश्री नथमलजी 'टमकोर' उस समय वरिष्ठ मुनि थे। वे इस प्रेक्षाध्यान में मुख्य योगदान देने वाले माने जा सकते हैं।

प्रेक्षाध्यान पद्धति मानो हमारे धर्म संघ का एक अवदान है। प्रेक्षाध्यान पद्धति से पहले भी हमारे यहां छोटा ध्यान, बड़ा ध्यान जो श्रीमद् जयाचार्य द्वारा प्रदत्त था वह चलता था। प्रेक्षाध्यान पद्धति शुरू होने के बाद लाड़नूं में अनेकों शिविर लगे थे। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी व मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी को गुरुदेव तुलसी ने अलंकरण प्रदान किया था। तुलसी अध्यात्म नीडम में व लाड़नूं के बाहर भी अनेकों शिविर चतुर्मासो में लगते तो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी वहां विराज जाते थे, आचार्यश्री तुलसी भी पधारते, प्रवचन भी होता।

जैन विश्व भारती प्रेक्षाध्यान पद्धति से गहरा जुड़ा हुआ रहा है। दिल्ली में अध्यात्म साधना केन्द्र में भी शिविर लगते और विशिष्ट व्यक्तित्व भी पधारते थे। अहमदाबाद में प्रेक्षा विश्व भारती भी प्रेक्षाध्यान से जुड़ा संस्थान है।

(शेष पेज 14 पर)

गृहस्थ जीवन की गाड़ी पर रहे धर्म और मोक्ष का अंकुश : आचार्यश्री महाश्रमण

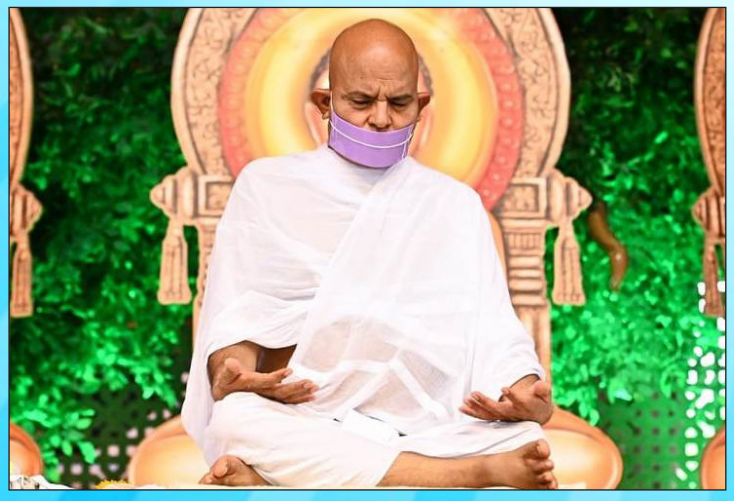

सूरत।
27 सितम्बर, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण ने आयारो आगम पर मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जीवन में काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष तत्त्व होते हैं। गृहस्थ जीवन की गाड़ी के दो पहिये काम और अर्थ होते हैं, इस गाड़ी पर धर्म और मोक्ष का अंकुश रहता है तो यह दुपहिया गाड़ी ठीक चल सकती है अन्यथा यह निरंकुश हो जाये तो दुःखों के गर्त में जाकर गिर सकती है। यहाँ काम का अर्थ काम भोग है। इसका साधन है- अर्थ, पैसा। ये दोनों सांसारिक चीजें हो जाती हैं। कोई गृहस्थ अर्थार्जन कर धन का उपयोग काम में करता है, तो कोई दान में भी उसका उपयोग करता है। धन की तीन गतियां होती हैं- दान, भोग और नाश। दान कई प्रवृत्तियों में दिया जा सकता है। जो आदमी धन का न तो दान देता है और न ही भोग करता है तो उस अर्थ का नाश भी हो सकता है। मानव दान कहां देता है, यह विवेक की बात होती है।

जो आदमी अर्थ और काम भोगों में आसक्त है वो तो मानो अपने आप को अमर मानकर बैठा है। वह यह नहीं सोचता है कि मुझे कभी मरना भी है। जो अमर की तरह जीवन जी रहा है वह आसक्ति में डूबा रहता है। अमर दुनिया में कोई नहीं है। निश्चिन्त होकर ना बैठें, काम और अर्थ पर धर्म और मोक्ष का अंकुश रहे। जीवन में ईमानदारी हो, उपभोग में संयम रहे, धन के प्रति आसक्ति न हो, मन में विसर्जन का, त्याग का भाव रहे।

(शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र है परम सुख का मार्ग : आचार्य श्री महाश्रमण

सूरत।
25 सितम्बर, 2024

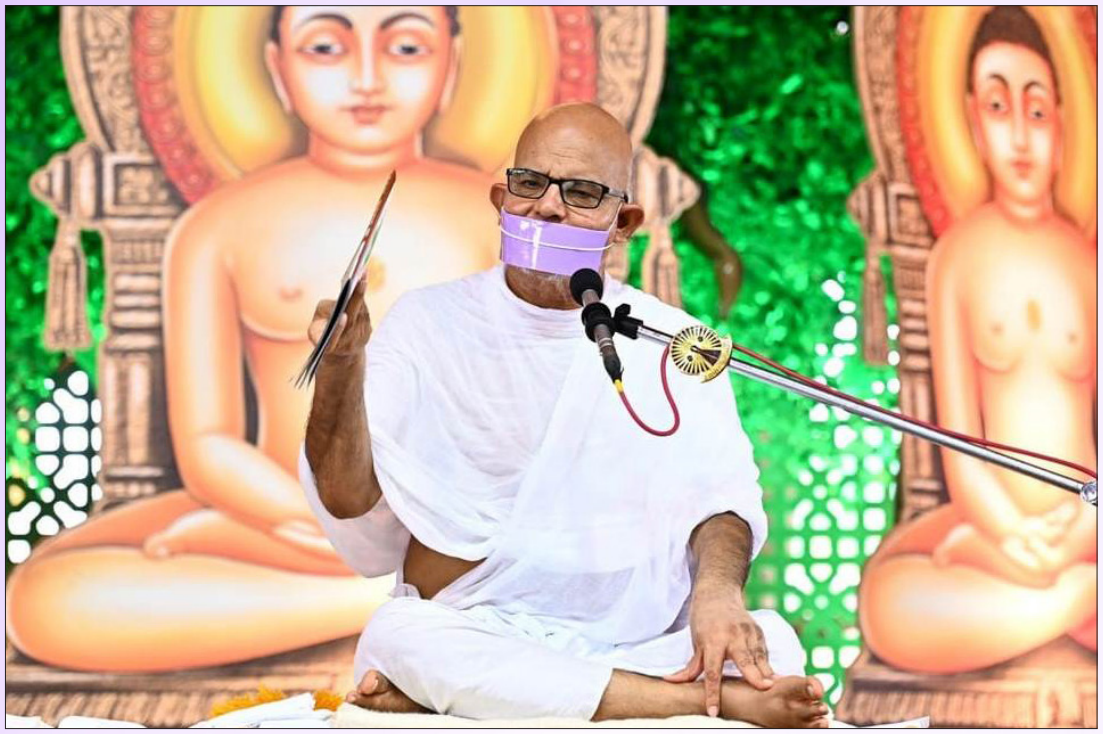

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आर्ष वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आदमी में लोभ की वृत्ति होती है। तत्वज्ञान के अनुसार दशम गुणस्थान तक लोभ का अस्तित्व रहता है। क्रोध, मान, माया पहले ही समाप्त हो जाते हैं, लोभ सबसे बाद में जाने वाला तत्व है। साधारणतया आदमी लोभ के कारण माया कर सकता है, झूठ बोल सकता है और हिंसा जैसा कार्य भी कर लेता है। लोभ जनक है, पाप का बाप है।

व्यक्ति अनेक प्रकार की कामनाएं पाल लेता है और उनकी पूर्ति के लिए पाप कार्य में उद्धत और संलग्न हो सकता है। जो व्यक्ति लोभ को छोड़ अलोभ बन जाये वह कितना निष्पाप, पापों से मुक्त बन जाता है। लोभ पर विजय पाने के लिए लोभ को संतोष से जीतें। किसी भावना को जीतना है, तो उसकी प्रतिपक्ष भावना का अभ्यास करो। गुस्से को जीतने के लिए उपशम की साधना करो, अहंकार को जीतने के लिए मार्दव की साधना करो, माया को जीतने के लिए ऋजुता की अनुप्रेक्षा का प्रयास करो।

लोभ से आदमी माया में चला जाता है, आत्मा को मलिन बना देता है। संतोष परम सुख होता है। एक चीज है सुविधा और दूसरी है शांति। पदार्थों से सुविधा मिल सकती है पर शांति साधना से मिलती है। आत्म रमण करने वाला साधु जितना शांति में रह सकता है, उतना पदार्थों में आसक्ति रखने वाला, सुख-सुविधा में रचा पचा आदमी शांति को प्राप्त नहीं कर सकता। त्याग है, वहां शांति है। समता-निष्कांक्षा होती है, वहां शांति होती है। सम्यक दर्शन, ज्ञान और चारित्र यह मोक्ष का मार्ग है, दुःख से मुक्ति का, परम सुख का मार्ग है।

चातुर्मास में स्थिरता से साधना करने का समय होता है। पर्युषण में धर्माराधना का, तपस्या का क्रम चलता है। शास्त्रों के पठन-पाठन से भी अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लोभ, माया एक ऐसा जाल है, जिसमें आदमी खुद फंस जाता है और दूसरों को भी ठगने का प्रयास करता है। आदमी अणुव्रत के नियमों को स्वीकार करे, प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करे तो मायाजाल से मुक्त हो सकता है। कामनाएं कम करने से आदमी परम सुख की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

जैन विश्व भारती द्वारा आचार्यश्री भारमलजी के जीवन पर चित्र कथा रूप प्रस्तुत पुस्तक पूज्यवर के समक्ष लोकार्पित की गई।

प्रोफेसर धर्मचंद जैन ने अपनी पचासवीं कृति 'भारतीय राजनीतिक व्यवस्था और राष्ट्रपति के दो भाग' को पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ कन्या मण्डल-सूरत ने चौबीसी के गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी। कच्छ-भुज से समागत झवेरी भाई, हितेश खांडोर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। भुज मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कीर्ति भाई ने भी अपनी भावना रखी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सत्संगत से प्राप्त हो सकती है अच्छी खुराक : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
28 सितम्बर, 2024

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन शास्त्र में आचारंग-आयारो प्रथम अंग आगम है। इसमें कई छोटे-छोटे सूत्र हैं, जिनके माध्यम से मानो आध्यात्मिक संदेश प्रदान किये गये हैं। आर्षवाणी - प्राच्य वाणी के स्वाध्याय से कुछ जानकारियां, कुछ प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। हमारे लिए इन आगम शास्त्रों का बहुत महत्व है।

कहा गया है कि बाल, अविरत और अज्ञानी, हिंसा में प्रवृत्त रहने वाला व्यक्ति है, उसकी संगत करने से क्या फायदा ? हमारे जीवन में संगत का भी प्रभाव पड़ सकता है। साधुओं का दर्शन ही पुण्य है, साधु तो तीर्थ होते हैं। ऐसे साधु जो दयामूर्ति, समतामूर्ति, क्षमामूर्ति, त्याग और तपोमूर्ति हैं वे किसी को दुःख नहीं देते, अहिंसा का पालन करते हैं, ऐसे साधु का मुख दर्शन करने वाले का पाप झड़ता है, आत्मा निर्मल बनती है। जो ज्ञानी गृहस्थ होते हैं, ऐसे गृहस्थों की संगति से अच्छी प्रेरणा, अच्छा ज्ञान प्राप्त हो सकता है। संगति मनुष्य से होती है तो साहित्य से भी संगति हो सकती है। सत्साहित्य के पढ़ने से दिमाग में अच्छी खुराक जाती है, अच्छी प्रेरणा मिलती है, आदमी के भाव शुद्ध बन सकते हैं। महापुरूषों का चित्र देखने से भी अच्छी प्रेरणा मिल सकती है।

श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय हमारे लिए बाह्य जगत के सम्पर्क के सक्षम साधन हैं। आदमी सुनकर और देखकर अच्छी बात को ग्रहण कर सकता है। अच्छे व्यक्तियों से सम्पर्क है तो अच्छे संस्कार आने की संभावना बन सकती है। गलत संगति से व्यक्ति गलत राह पर जा सकता है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फॉरम द्वारा पंचम प्रशासनिक अधिकारी सम्मेलन का आयोजन पूज्यवर की पावन सन्निधि में हुआ। इस संदर्भ में टी.पी.एफ. राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत, मुम्बई की इनकम टैक्स की ज्वाइंट कमिश्नर सारिका जैन, एडिशनल कलेक्टर सिद्धार्थ जैन, आई.आर.एस. अशोककुमार कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री ने इस संदर्भ में पावन आशीष प्रदान करते हुए कहा कि जहां समूह होता है, वहां शासन-प्रशासन की आवश्यकता भी हो सकती है। लोकतांत्रिक प्रणाली में प्रशासनिक अधिकारी होते हैं और चुनाव के माध्यम से मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आते हैं। संस्थाओं का भी अपना विधान है। व्यवस्था प्रबन्धन की प्रणाली होती है। आज तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में ऐसे अधिवेशन का आयोजन हो रहा है। प्रशासनिक स्तर पर आना भी जीवन की एक सफलता है। कितना श्रम किया होगा, तब ऐसे क्षेत्र में आने का अवसर मिलता है। प्रशासन के क्षेत्र में अनेकांतवाद का उपयोग हो सकता है। प्रशासनिक जीवन में भी संयम और नशामुक्तता रहे, अहिंसा, नैतिकता व ईमानदारी हो तो प्रशासनिक क्षेत्र में धर्म को जोड़ा जा सकता है।

'महाश्रमण जीवनगाथा' की गायिका अंतिमा जैन व गायक सुनील डागा ने गीत को प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में हुआ बारह व्रत दीक्षा सम्मेलन का आयोजन

सूरत।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा बारह व्रत दीक्षा सम्मेलन का आयोजन सूरत में किया गया। आचार्य प्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि साधुओं के पाँच महाव्रत होते हैं, जिसकी वो पालना करते हैं। उसी प्रकार श्रावकों के लिए भी छोटे-छोटे नियम होते हैं जिनका वो पालन कर सकते हैं। पूज्यप्रवर ने श्रावक के बारह व्रतों की विस्तृत व्याख्या करने के पश्चात फरमाया कि उसकी पालना हो उसके लिए उसका ध्यान रखें और बराबर उसको याद करें। बारह व्रत की पुस्तक पढ़ते रहें ताकि अपने स्वीकृत संकल्पों का पालन अच्छे ढंग से हो सके। श्रावक त्याग की चेतना, संयम में रहे, मोह आसक्ति का त्याग करने का प्रयास करे। जितना हल्कापन आएगा आसक्ति छूटेगी और अनासक्ति बढ़ेगी, चेतना की निर्मलता बढ़ेगी, चेतना निर्मल होगी तो आगे सुगति भी प्राप्त हो सकेगी। त्याग और नियम आदमी लेता है तो अच्छे ढंग से उनका पालन भी करे। एक-एक नियम भी बहुत कल्याणकारी हो सकता है। आत्मा के लिए तो कल्याणकारी है ही, व्यवहार के लिए भी कल्याणकारी हो सकता है।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भगवान महावीर ने बारह व्रत का जो अवदान प्रदान किया वह यूनिवर्सल अवदान है। क्योंकि महावीर जब प्रवचन करते थे तो वे किसी समुदाय विशेष के लिए नहीं सर्वजन हिताय के लिये करते थे। उन्होंने बारह व्रत को वैश्विक समस्याओं से जोड़कर बताया कि विश्व के न जाने कितने-कितने राष्ट्र, उनके प्रतिनिधि गण कितने-कितने सेमिनार करते हैं, कितनी कॉन्फ्रेंस करते हैं कि वैश्विक समस्याओं का समाधान कैसे हो? यदि हम बारहव्रत और वैश्विक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो ऐसा लगता है कि भगवान महावीर ने दूरगामी चिंतन से बारह व्रत का महत्वपूर्ण अवदान दिया है। आचार्य श्री तुलसी की वाणी थी कि बारह व्रत यूनिवर्सल विचार है, जिसके प्रति जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। अभातेयुप के 60वें स्थापना दिवस पर मुनिश्री ने कहा कि अभातेयुप की यह यात्रा हमें विराम या विश्राम नहीं बल्कि उत्साहित करती है कि हमें और द्रुतगति से बढ़ना है। सम्मेलन की शुरुआत में मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि आज अभातेयुप का स्थापना दिवस व साथ में बारह व्रत दीक्षा सम्मेलन है। यह अच्छी बात है कि कार्यक्रम की शुरुआत धर्म के साथ हो रही है। मुनिश्री ने आगे कहा कि बारहवर्ती श्रावक बनने से अच्छी भावना, अच्छी लेश्या व शुभ परिणाम जीवन में आते हैं। पहले संस्था शिरोमणि महासभा इस उपक्रम को चलाती थी, अब इन वर्षों में अभातेयुप इस उपक्रम को चला रही है। जगह-जगह बारहव्रत कार्यशालाएँ भी आयोजित होती हैं। मोहनीय कर्म का हल्कापन होता है, तभी बारह व्रती बन सकते हैं। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अभातेयुप एवं बारहव्रत सम्मलेन के संबंध में जानकारी प्रेषित की। राष्ट्रीय प्रभारी रोहित दुगड़ ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

'लोगस्स-एक कल्पवृक्ष' अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

उदयपुर। डॉ. साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में लोगस्स-एक कल्पवृक्ष अनुष्ठान कार्यक्रम का समायोजन हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि लोगस्स एक करिश्माई कल्पवृक्ष है, एक अनमोल चिंतामणि है। यह अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न स्तोत्र है। लोगस्स पाठ से मानव की तकदीर और तस्वीर बदलती है, दिशा और दशा बदलती है। तीर्थंकर प्रभु के स्तवन से हर साल सौम्य बनता है, हर दिन दिनमणि जैसा हो सकता है, हर पल पारसमणि तुल्य बन जाता है। साध्वीवृंद ने 'करुणानिधान लोगस्स वरदान' गीत का संगान किया। सामूहिक एकासन अनुष्ठान महिला मंडल उदयपुर द्वारा कराया गया जिसमें लगभग 251 श्रावक-श्राविकाओं ने एकासन किया। लोगस्स कल्पवृक्ष एक अनुष्ठान में लगभग 175 जोड़ों की उपस्थिति रही। तेममं अध्यक्षा सीमा बाबेल ने सबका स्वागत व मंत्री ज्योति कच्छारा ने आभार ज्ञापन किया।

कर्मों के शिथिलीकरण का उपाय है तपस्या

कांदिवली।

तेरापंथ भवन कांदिवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आमेट निवासी पवन बोहरा (धर्मपत्नी कमलेश बोहरा) तथा निधिका वोहरा (सुपुत्री निर्मल बोहरा) के मासखमण तप का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में साध्वीश्री ने कहा साधना की धुरी आत्मा होती है। जब आत्मा का ऊर्ध्वगमन होता है तब ही आत्मा का विकास होता है।

आत्मा की यात्रा ऐसी यात्रा है जिसे न व्यक्ति नीचे गिरा सकता है न उंचा उठा सकता है। जिस प्रकार भारीपन के कारण पत्थर नीचे और हल्केपन के कारण रूई और धुआं ऊपर की ओर गति करते हैं, इसी प्रकार कर्मों के भारीपन के कारण आत्मा अधोगामी बन जाती है। तपस्या एक ऐसा उपक्रम है जिसकी आराधना से आत्मा ऊर्ध्व गामी बन सकती है। तपस्या कर्मों के शिथिलीकरण का उपाय है। आज दो मासखमण साधिका पवन और निधिका संकल्प के साथ सोपान पर चढ़ रही हैं। लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में प्रस्थान कर रही हैं, वे निरन्तर आगे बढ़ती रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी वृंद द्वारा वीतराग वंदन से हुआ। बोहरा परिवार की ओर से कमलेश बोहरा ने अपने भाव प्रदर्शित किए। तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली और बड़ा परिजनों ने तप अभिवंदना में अलग-अलग संगान किए। साध्वी प्रमुखा श्री द्वारा प्रदत्त संदेशों का वाचन तेरापंथ सभा कांदिवली के मंत्री रतनलाल सिंघवी और युवक परिषद अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन महिला मंडल अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल और नीतू दुगड़ ने किया। साध्वी वृंद ने अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल ने लघु नाटिका प्रस्तुत की। तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल द्वारा तपस्विनी बहनों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली के मंत्री पंकज कच्छारा ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

तपस्या एक ऐसा उपक्रम है जिसकी आराधना से आत्मा ऊर्ध्व गामी बन सकती है।

तप अभिनंदन समारोह आयोजित

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में मंजु सिंघी के मासखमण तप पर अभिनंदन समारोह का आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा आत्म शुद्धि व चेतना की पवित्रता के दो साधन हैं - जप और तप। तप साधना की महक है। तप आत्म उज्ज्वलता की कहानी है। तप आंतरिक शक्तियों को उजागर करने का अचूक उपाय है। तप से रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति संभव है। तप से व्यक्ति आधि-व्याधि से मुक्त होकर समाधि का अनुभव कर सकता है। तप का उद्देश्य यश प्राप्ति नहीं होकर कर्म निर्जरा का होना चाहिए। मंजु सिंघी ने मासखमण तप कर बहुत ही हिम्मत का परिचय दिया है। इस चतुर्मास का यह ग्यारहवां मासखमण तप है। अधिक से अधिक भाई-बहिन तप के क्षेत्र में प्रगति करते रहें। इस अवसर पर तपस्वी को प्रदत्त साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली ने किया। सभा की ओर से स्वागत एवं तप अनुमोदना में मंत्री बसंत पटावरी ने विचार व्यक्त किये। ऋतिका सिंघी ने तप अनुमोदना में सुमधुर गीत का संगान किया। सभा द्वारा तपस्वी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

भाव विशुद्धि व आत्मशुद्धि तपस्या का लक्ष्य होना चाहिए

पेटलावद।

अभिनन्दन किसी व्यक्ति का नहीं, वरन त्याग-तपस्या का होता है। तप एक संजीवनी बूटी है। तपस्या के प्रभाव से शरीर व मन दोनों स्वस्थ बन जाते हैं, गुरु कृपा का बल, आत्मबल, तप के प्रति श्रद्धा बल से व्यक्ति तपस्या के क्षेत्र में सफल हो जाता है।

भाव विशुद्धि व आत्मशुद्धि हेतु तपस्या करना तपस्या का सही लक्ष्य होना चाहिए।

उक्त आशय के उद्गार साध्वी उर्मिलाकुमारीजी ने तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित तप अभिनंदन समारोह मे तेरापंथ भवन में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए।

साध्वी मृदुलयशाजी ने कहा कि तपस्या व्यक्ति के विकास की दिशाएं खोलता है। अनेकानेक साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं ने तपस्या कर इस धर्मसंघ की नींव को मजबूत बनाया है। आपने धर्मसंघ के महातपस्वियों व दीर्घ तपस्विनी साध्वी पन्नाजी की तपस्याओं के बारे मे विस्तार से बतलाया।

चतुर्मासकाल में पूजा मेहता ने मासखमण, विमलादेवी वोरा ने धर्मचक्र तप एवं अनेकों तपस्वियों ने विभिन्न प्रकार की तपस्या कर कर्म निर्जरा की। तप अनुमोदना मे साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत को प्रस्तुति दी।

मुक्ता मूणत, तेरापंथी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील भांगु, कन्यामंडल संयोजिका ने तप अनुमोदना में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। चतुर्मास में विभिन्न तपस्या करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को तेरापंथी सभा द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संचालन तेरापंथी सभा के सहमंत्री पंकज पटवा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

तप समाचार

मोमासर। साध्वी संघप्रभा जी ठाणा 3 के सान्निध्य में कनक देवी बाफना एवं अंकिता सेन ने अठाई का प्रत्याख्यान तेरापंथ भवन मोमासर में आयोजित किया।

सरदारशहर। डॉ. साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला की 7 वर्षीय काव्या बुच्चा ने 8 की तपस्या एवं सौरभ छाजेड़ में 9 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

सुजानगढ़। तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में गरिमा कोठारी ने आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

इरोड। मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन इरोड में प्रज्ञा बैद ने 8, यश दूगड़ ने 8, रौनक बोथरा ने 9 और कमल बोथरा ने 29 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पीलीबंगा। साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में हनुमानगढ़ जंक्शन से उन्नति दफ्तरी की 19 दिन की तपस्या का तप अभिनंदन कार्यक्रम हुआ।

माधावरम्, चेन्नई। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में केसर रांका, लक्ष्य बाफणा ने 11 की तपस्या और डिम्पल बाफणा ने 9 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

भिवानी। मुनि देवेंद्रकुमारजी व तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराजजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में सीमा जैन ने 9 दिन एवं संयम जैन ने अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

कालू। साध्वी उज्जवलरेखाजी के सान्निध्य में मुदित बोथरा एवं कोमल बोथरा (भाई-बहन) ने नौ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पेटलावद। साध्वी उर्मिलाकुमारी जी के सानिध्य में पेटलावद में अंजलि पटवा ने 11 उपवास, वियान मूणत, खुश मांडोत, प्रियांशी मांडोत, सीमा नागौरी ने 9 उपवास, विशाल भंडारी, सुनील भांगु, विजय वोरा (झकनावदा), पंकज कोठारी (झाबुआ) ने 8 उपवास, शकुंतला भंडारी ने 2 माह एकांतर, नेहा भंडारी, दाडिम देवी मूणत, भावना भंडारी ने एक माह एकांतर, रिद्धिमा मूणत, सारिका मूणत, प्रियंका मूणत, रचिता मूणत, मधुबाला मूणत, रिटा कोटड़िया, शिवानी भंडारी, गरिमा भंडारी, योगिता भंडारी, किरण बम्बोरी (सारंगी) ने लगभग 2 माह निरंतर एकासन तथा पूर्णिमा वोरा व सरिता कोटड़िया (रायपुरिया), कुसुम बम्बोरी (सारंगी) ने एक माह से अधिक निरंतर एकासन की तपस्याएं सम्पन्न की।

संक्षिप्त खबर

शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन

सरदारशहर। डॉ. साध्वी शुभप्रभा जी ठाणा- 4 के सानिध्य में सत्र 2024-25 के लिए तेयुप पूर्व अध्यक्ष विकाश बोथरा व जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष राजेश बुच्चा ने नवनियुक्त तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया को व उनकी नव निर्वाचित टीम मंत्री अर्हम सुराणा, कोषाध्यक्ष शुभम लुणिया, उपाध्यक्ष प्रथम धीरज दुगड़, द्वितीय चंद्रप्रकाश सेठिया, सहमंत्री प्रथम विशाल बोरड, द्वितीय मोहित आंचलिया, संगठन मंत्री सुभम सेठिया, किशोर मंडल प्रभारी अखिल श्यामसुखा एवं तेयुप परामर्शक सिद्धार्थ चिंडालिया, राजीव दुगड़ को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, अणुव्रत समिति, महिला मंडल व श्रावक समाज उपस्थिती रही। साध्वी श्री ने नशीले पदार्थों के सेवन न करने का संकल्प दिलाते हुए धर्मसंघ की गरिमा के अनुकूल कार्य करने की प्रेरणा दी।

बच्चों को किया स्वेटर का वितरण

राजराजेश्वरी नगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरी नगर ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करते हुए गवर्नमेंट लोअर प्राइमरी स्कूल पट्टनगेरे मे पढ़ रहे 130 बच्चों को स्वेटर का वितरण करवाया। सेवा कार्य प्रभारी सौरभ चोरड़िया ने बच्चों को तेरापंथ युवक परिषद के बारे में जानकारी दी। प्रायोजक संजय बैद ने परिषद द्वारा किए कार्यों की सराहना की। परिषद् से निवर्तमान अध्यक्ष विकाश छाजेड़, प्रबुद्ध विचारक सुशील भंसाली ने अपने समय का विसर्जन कर सेवा कार्य में सहयोग किया। राकेश दुगड़ एवं वंदना भंसाली का विशेष सहयोग रहा।

मासखमण तपस्वियों का अभिनंदन समारोह हुआ आयोजित

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में सुजानगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी हनुमानमल सेठिया व श्रीडुंगरगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी ज्योति अशोक सिंघी के मासखमण तप के उपलक्ष में ओसवाल भवन में अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ।

इस अवसर पर साध्वी संगीतश्रीजी ने कहा आत्मबली, शरीरबली व संकल्पबली व्यक्ति ही तपस्या कर सकता है। तपस्या में अनंत शक्ति है। तपस्या से व्यक्ति पुराने पाप कर्मों को खत्म कर देता है। भाई हनुमानमल का जीवन तपमय है। हर वर्ष लम्बी तपस्याएं करते हैं। इन्होंने 10 मासखमण और लंबी तपस्याएं की है, इनका पूरा जीवन तपस्या से ओतः प्रोत है। इनकी

आत्मबली, शरीरबली व संकल्पबली व्यक्ति ही तपस्या कर सकता है। तपस्या में अनंत शक्ति है। तपस्या से व्यक्ति पुराने पाप कर्मों को खत्म कर देता है।

धर्मपत्नी सरला बाई ने भी एकासन का मासखमण कर इनका साथ दिया है। इनका पूरा परिवार संस्कारी, धार्मिक है। इसी क्रम में बहन ज्योति जिन्होंने मासखमण पहली बार किया है इनका भी मनोबल बहुत है, तप के महत्व को समझा है।

इस अवसर पर सरला बाई दूगड़ ने 16 का, सरोज निर्मल बोथरा ने 11 का व ममता रवि पगारिया ने 51 आयंबिल (मौन के साथ) का प्रत्याख्यान किया। साध्वी वृंद ने तपस्वी भाई-बहनों के तप की अनुमोदना की।

दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभाध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी, गाजियाबाद सभा अध्यक्ष सुशील सिपानी, दिल्ली तेयुप अध्यक्ष एवं टीम, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं, पूर्वी दिल्ली तेमम बहनों, ओसवाल समाज अध्यक्ष आनंद बुच्चा, सेठिया परिवार की बहनों, पूजा सेठिया, सिंघी परिवार के भाई-बहन, संजय भटेरा आदि ने अपने विचार, वक्तव्य व गीत से अनुमोदना की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन सुरेश भंसाली ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम

बीदासर।

समाधि केंद्र बीदासर में प्रियंका भंसाली के मासखमण एवं संगीता बैद की ग्यारह की तपस्या का तपोभिनन्दन समारोह मनाया गया। 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी विमलप्रभाजी ने गीत एवं कविता के द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति दी। समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी ने कहा- जैन धर्म में तप का विशिष्ट स्थान है और तेरापंथ धर्मसंघ में भी अनेक विशिष्ट तपस्वी हुए हैं। मुनि सुखलालजी स्वामी जिन्हें घोर तपस्वी के नाम से जाना जाता है, उन्होंने अपने संकल्पबल से साथ साठ वर्ष की उम्र में अनशन किया, जिसका निश्चय उन्होंने मात्र छत्तीस वर्ष की उम्र में कर लिया था। प्रियंका भंसाली एवं संगीता बैद ने भी दृढ़ संकल्पशक्ति एवं मनोबल का परिचय दिया है, दोनों तप के क्षेत्र में उत्तरोतर विकास करती रहें। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभा जी ने कहा कि दोनों तपस्विनी बहनों ने महान निर्जरा का कार्य किया है। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त सन्देश का वाचन किया गया।

तेयुप, महिला मण्डल, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं की ओर से तपस्विनी बहनों का अभिनन्दन किया गया। पारिवारिक सदस्यों ने अनुमोदना गीत का संगान किया। प्रेमसुख बेंगानी, तेरापंथ महिला मंडल सुजानगढ़ ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन भावना दुगड़ ने किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की 7 दिवसीय कार्यशाला

पाली।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद पाली द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की 7 दिवसीय कार्यशाला स्पीकिंग स्किल्स, वेलकम स्पीच, स्टेज प्रोटोकॉल,चीफ गेस्ट का स्वागत, टीम वर्क, लीडरशीप क्वालिटी जैसी कलाओं में निपुणता प्रदान करने हेतु आयोजित हुई।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग जोनल ट्रेनर शिवानी चोपड़ा, रमेश भंसाली और नेशनल ट्रेनर महावीर भटेवरा इस कार्यशाला के ट्रेनर्स रहे।

कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। विजय गीत का संगान महिला मंडल और कन्या मंडल सदस्यों ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता किया। तेयुप पाली अध्यक्ष विपिन बांठिया ने सभी का स्वागत किया। अभातेयुप राज्य प्रभारी रोशन नाहर बताया इस सीपीएस कार्यशाला में 33 से अधिक संभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

मुख्य अतिथि महेन्द्र बोहरा एवं प्रशिक्षक महावीर भटेवरा, सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, शाखा प्रभारी कैलाश तातेड, महिला मंडल, अणुव्रत समिति एवं दानदाता परिवार की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस कार्यशाला को सफल बनाने में संयोजक नैतिक मंडोत, नवीन चौरड़िया का सराहनीय श्रम रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा तत्व ज्ञान संबंधी मॉडल की प्रस्तुति

गांधीनगर, बैंगलोर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर के तत्वावधान में साध्वी उदितयशाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में प्रशिक्षिका बहनों द्वारा बनाए गए जैन भूगोल, तत्वज्ञान, कालचक्र, छः जीवनिकाय आदि विषय पर बनाए गए मॉडल की प्रस्तुति तेरापंथ सभा भवन में हुई। साध्वी उदितयशा जी ने प्रशिक्षिकाओं के श्रम की सराहना की एवं कहा इस प्रकार के आयोजन से ज्ञान का विकास तो होता ही है, साथ में कर्म निर्जरा भी होती है। साध्वी संगीतप्रभाजी ने प्रशिक्षिकाओं को मार्गदर्शन प्रदान करवाया। ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक माणक संचेती ने ज्ञानशाला संबंधी जानकारी प्रदान की। महासभा सदस्य प्रकाश लोढा ने भी प्रशिक्षिकाओं के श्रम की सराहना की। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, युवक परिषद अध्यक्ष विमल धारीवाल, ज्ञानशाला आंचलिक सहसंयोजक रजत बैद उपस्थित थे। प्रस्तुति में शिला सियाल का पूर्ण सहयोग रहा। बेंगलुरु की 16 ज्ञानशालाओं ने इस प्रस्तुति में भाग लिया। संचालन नीता गादिया ने किया। आभार सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने दिया।

222वें चरमोत्सव पर मधुमेह जांच शिविर

राजाजीनगर। महामना आचार्य श्री भिक्षु के 222वें चरमोत्सव के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत रियायती दर पर मधुमेह जांच शिविर का समायोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। मधुमेह जांच शिविर के अंतर्गत चार विभिन्न प्रकार की जांचे समावेश की गई। कुल 28 सदस्यों ने अपनी जांच करवाई। शिविर आयोजन में प्रायोजक चाँदमल हेमन्तकुमार दिनेशकुमार गादिया, सारंगवास परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

पर्युषण महापर्व के कार्यक्रम

भायंदर। साध्वी पुण्ययशाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व के अंतर्गत संवत्सरी कार्यक्रम उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में भगवान महावीर का जीवन वृत्त, संवत्सरी का महत्व, कालचक्र, सम्यकत्व व क्षमा का महत्व आदि विषयों को उजागर किया। कन्या मंडल, किशोर मंडल, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, तेयुप द्वारा दिवस संबंधी गीत की प्रस्तुति हुई। साध्वी विनीतयशाजी, साध्वी वर्धमानयशाजी, साध्वी बोधिप्रभाजी द्वारा खाद्य संयम दिवस, जप दिवस, मौन व ध्यान दिवस पर उनके महत्व को उजागर किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में अंताक्षरी, प्रश्न हमारे उत्तर आपके, तेरापंथ की बोलती तस्वीर, तीर्थंकर जीवन वृत्त, तेरापंथ की यशस्वी साध्वी प्रमुखाओं का जीवन दर्शन, संगीत गायन आदि कार्यक्रमों की अच्छी प्रस्तुति रही।

मासखमण तप अभिनन्दन समारोह का आयोजन

काजूपाड़ा, मुंबई। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से आमेट निवासी काजूपाड़ा प्रवासी अंजु राकेश चौधरी के पुत्र रोहित चौधरी ने मात्र 25 वर्ष की आयु में मासखमण (32-उपवास) तप कर अद्भुत मनोबल का परिचय दिया। साध्वी राकेशकुमारी जी के सान्निध्य में चेंबूर तेरापंथ भवन में मासखमण तप अनुमोदना का कार्यक्रम रखा गया। तपस्वी की अनुमोदना में पारिवारिक सदस्यों ने विभिन्न तपस्याओं के संकल्प स्वीकार किए।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** भादरा निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी रणजीत सिंह बैद-चंदा बैद के पुत्र विवेक बैद एवं पुत्रवधू अदिति बैद की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान में हुआ। जैन संस्कारक अनूप गंग ने मंत्रोच्चार सहित नामकरण का कार्यक्रम संचालित किया।

■ **फरीदाबाद।** साक्षी- आलोक सुराणा के नवजात पुत्र, अनिता- अशोक सुराणा के पौत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया गया। जैन संस्कारक भरत कुमार बेगवानी, राजेश जैन, जितेंद्र लूणिया ने मंगल मंत्रोच्चारण द्वारा विधि संपादित कराई।

■ **बेंगलुरू।** राजलदेसर निवासी, बेंगलुरु प्रवासी सरिता–कमल हीरावत के पौत्र एवं श्रेया-आशीष हीरावत के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक जितेंद्र घोषल एवं विक्रम दुगड़ ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया। शिशु का नाम लक्ष्य रखा गया।

■ **साउथ हावड़ा।** साउथ हावड़ा प्रवासी संतोष देवी बेगवानी के सुपौत्र एवं सुमित-मेघा जैन के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैंगानी एवं ऋषभ सिपानी ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया। पारिवारिक जनों ने शिशु का नाम गौतम रखा।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **राजाजीनगर।** शांतिलाल, सुनीलकुमार वेदमुथा के नूतन प्रतिष्ठान 'मंजु टॉयस एंड गेम्स' का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया गया। संस्कारक रणीत कोठारी ने मंगल भावना यंत्र एवं जैन संस्कार विधि की महत्ता का विश्लेषण करते हुए विभिन्न मंत्रोच्चार के द्वारा विधि को मंगलपाठ से संपन्न करवाया।

वृहद् तप अभिनन्दन समारोह एवं पखवाड़ा तप प्रत्याख्यान का सुंदर आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में श्रावण-भाद्रव महिने में अठाई से पखवाड़ा तक की तपस्या करने वाले तपस्वी भाई-बहनों का श्री तुलसी महाप्रज्ञ फ़ाउंडेशन, तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली एवं मलाड द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में साध्वीश्री ने कहा-व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ता है, उसके लिए मनोबल और पुरुषार्थ आवश्यक है। आगे बढ़ने वाला एक व्यक्ति होता है, उसे सहयोग देना भी बहुत बड़ी तपस्या है। आगे बढ़ने वाले के मार्ग में यदि कोई अवरोध आ जाए तो सहयोगी उस बाधा को दूर करने का प्रयास करे, यह कर्म निर्जरा ओर आत्मोपम्य भाव है।

साध्वीश्री ने आगे कहा- सामाजिक कार्य हो या पारिवारिक, धार्मिक कार्य हो या लौकिक, पारस्परिक सहयोग अपेक्षित होता है। लक्ष्य बनाने वाला व्यक्ति स्वयं होता है, पर लक्ष्य प्राप्ति में अनेक हाथों का आलम्बन होता है। आज तपस्या करने वाले भाई बहनों का अभिनंदन किया जा रहा। इस तपस्या का भी विशेष महत्व है पर तप के साथ उपशम भाव वृद्धिंगत होना चाहिए। इस अवसर पर कांदिवली, गोरेगांव, मलाइ, दहिसर ओर बोरीवली क्षेत्र के तपस्वियों का सम्मान किया गया। साध्वी वृन्द द्वारा भिक्षु स्तवन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ युवक परिषद मालाड अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। जयपुर से समागत उदित सेठिया ने अपने भावाभिव्यक्ति के साथ तपस्वियों को शुभकामनाएं दी। तिरुवन्नामलाई के गणेश गौरव सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वीवृन्द ने सभी क्षेत्रों के तपस्वियों की अनुमोदना में गीत का संगान किया। सूरत से समागत नीलेश बाफना ने तप-अनुमोदन गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मालाड़ अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने किया।

सम्वत्सरी महापर्व का आयोजन

कोटा।

गुमानपुरा स्थित अणुव्रत भवन में 'शासनश्री' साध्वी धनश्री ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ समाज ने सम्वत्सरी पर्व मनाया। इस अवसर पर प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्री ने भगवान महावीर के जीवन वृत्तांत का विस्तार से वर्णन किया। साध्वीश्री ने कहा कि ये पर्व क्षमा पर्व है, कमजोर व्यक्ति न क्षमा मांग सकता है न क्षमा दे सकता है। जिस प्रकार छोटा सा घाव शरीर को घायल कर देता है, उसी प्रकार मन पर लगा घाव आत्मा को घायल कर देता है। इस अवसर पर चंदनबाला के जीवन का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया। साध्वी शीलयशाजी, साध्वी सलिलयशाजी, साध्वी विदितप्रभाजी ने भगवान महावीर की जीवनी पर भावात्मक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला एवं टीपीएफ ने 'सम्वतसरी पर छोटे-मोटे मन भेदों को मेटें और मिटाएं' गीतिका की प्रस्तुति दी। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात सभा अध्यक्ष गजराज बोथरा, मंत्री उमेश गोयल ने सभी से क्षमा याचना की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

दक्षिण मुम्बई

मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की विशेष आराधना हुई। मुनि कुलदीप कुमार जी ने भगवान महावीर के जीवन वृत्त को व्याख्यायित करते हुए कहा- भगवान महावीर का जीवन गुणों का महान संचयन है। उन्होंने जन्म-जन्मांतरों की कलुष संस्कारों की परतों को उतारा, भीतरी अनावरण हुआ और आत्म कर्तृत्व से वे अनुपमेय बन गये। भगवान महावीर की सहिष्णुता हमारे लिए आदर्श और अनुकरणीय है।

मुनि मुकुल कुमार जी ने विभिन्नमुखी विषयों पर जीवन कौशल, जीवन प्रबंधन एवं उन्नति के रहस्यमय सूत्रों पर उद्बोधन देते हुए कहा - पर्युषण महापर्व के उपलक्ष पर एक संकल्प अवश्य करें कि मैं अपने क्रोध पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करूंगा। क्योंकि क्रोध के आने पर सुख के नीड़ को उजड़ने या उजाड़ने में पल भर का भी समय नहीं लगता। सारे अपराधों, दुखों, अशांति एवं अमानवीय कार्यों के लिए हमारा क्रोध और आवेग ही जिम्मेदार है। क्रोध मनुष्य की विवेक चेतना को ही नष्ट नहीं करता अपितु उसके सपनों, शुभ भविष्य, सुख, शांति, समृद्धि और ज्योतिर्मय जीवन को भी नष्ट कर देता है। आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद महिला मंडल, अणुव्रत समिति संयोजक, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञान शाला परिवार दक्षिण मुंबई एवं श्रावक समाज का पूरा सहयोग रहा।

विलेपार्ले

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने पर्युषण कालीन आचार संहिता का पालन करने के लिए संकल्प किया। पर्युषण पर्व की महत्ता बताते हुए साध्वीश्री ने कहा- पर्युषण पर्व धर्म का प्रवेश द्वार, सिद्धि का राजपथ है। चेतना को जगाने वाला पर्व है। प्राणी मात्र के साथ मैत्री का संबंध जोड़ने वाला पर्व है। साध्वी संचितयशाजी ने कहा- पर्युषण पर्व में हर क्षण, हर पल जागरूक रहकर वीतराग वाणी का श्रवण कर अमृत रस का पान करना है। साध्वी रक्षितयशा जी ने खाद्य संयम दिवस पर चन्दन बाला के तेले के तप की प्रेरणा देते हुए कहा- पर्युषण में तप की गंगा बहाने का आह्वान किया। बाह्य आडम्बरों से हटकर भीतर की चेतना का दीप जलाने की प्रेरणा दी। साध्वी जागृतप्रभा जी ने 'आवो पर्युषण मनावां' गीत का संगान किया। स्वाध्याय दिवस पर प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा- स्वाध्याय तप है। जो व्यक्ति स्वाध्याय में तल्लीन रहता है, वह परम अलौकिक आनन्द को प्राप्त करता है। साध्वी संचितयशा जी ने भगवान महावीर के नयसार के भव के बारे में बताया। साध्वी जागृतप्रभाजी ने कहा स्वाध्याय से विरक्ति के भाव जागते हैं। साध्वी रक्षितयशाजी ने स्वाध्याय गीत का संगान किया।

तृतीय दिवस साध्वी शकुन्तला कुमारी जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक में सैकड़ों भाई-बहनों ने सामायिक की पचरंगी में अपनी सहभागिता निभाई। साध्वीश्री ने कहा- सामायिक बाहर से भीतरी जगत में प्रवेश करने का प्रमुख द्वार है। अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का राजमार्ग है। साध्वी रक्षितयशाजी ने सामायिक का प्रयोग करवाया। साध्वी जागृतप्रभाजी ने सामायिक गीत का संगान किया। साध्वी संचितयशा जी ने मरीचि के भव के बारे में विस्तार से बताया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी श्री ने कहा- कठोर वचन विष और मधुर वचन अमृत वर्षा के समान हैं। साध्वी जागृतप्रभा जी ने वाणी संयम पर कहा- विवेक पूर्ण, प्रिय, मधुर भाषा ही सुखद संसार को बसाती है। साध्वी रक्षितयशा जी ने गीत के संगान किया। साध्वी संचितयशा जी ने कहा- महापुरुष अंधकार को प्रकाशमय बनाने के लिए इस धरा पर जन्म लेते हैं। अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी शकुन्तला कुमारीजी ने कहा- अणुव्रत जीवन का श्रृंगार है। अणुव्रत नैतिक जीवन जीने का शंखनाद करता है। साध्वी रक्षितयशा जी ने कहा- चरित्रनिष्ठ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज, राष्ट्र का उत्थान कर सकता है। साध्वी जागृत प्रभा जी ने 'अणुव्रत जगा रहा है' गीत का संगान किया। साध्वी संचितयशा जी ने भगवान महावीर के जीवन दर्शन के बारे में विस्तार से विवेचन किया।

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने जप दिवस पर कहा - किसी भी मंत्र का जप किया जाए तो वह पतित को पावन बना देता है, वासना को उपासना में बदल देता है। साध्वी रक्षित यशाजी ने कहा- जप भीतरी स्नान है जिससे मन में स्फूर्ति आती है और कोलाहल शांत होता है। साध्वी जागृतप्रभाजी ने 'जप हर रोज करो' गीत का संगान किया। साध्वी संचितयशाजी ने भगवान महावीर के साधना काल के बारे में बताया। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने ध्यान दिवस पर कहा- ध्यान अन्तरात्मा में उतरने की कला है। ध्यान में बीता हमारा एक क्षण हमारे पूरे दिन को बदल सकता है, एक दिन पूरे जीवन को बदल सकता है। साध्वी रक्षितयशा जी ने कहा- आध्यात्मिक और दैवीय शक्तियों से जुडने के लिए ध्यान के अलावा और कोई मार्ग नहीं है। साध्वी जागृतप्रभाजी ने अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया। साध्वी संचितयशा जी ने कहा - ध्यान से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक व्याधियों का शमन होता है। भगवती संवत्सरी के अवसर पर विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए साध्वी शकुन्तला कुमारी जी ने संवत्सरी पर्व की महत्ता बताते हुए कहा- आज के दिन आत्मावलोकन कर मन की गांठों को खोलना है। साध्वीश्री द्वारा महासती चन्दनबाला के आख्यान का वाचन किया गया।

साध्वी संचितयशा जी ने कहा- प्रभु महावीर ने जीवन भर सत्य की साधना और अहिंसा की आराधना की। साध्वी जागृतप्रभा जी ने तीर्थकरों व विशिष्ट आचार्यों से परिचित करवाया। साध्वी रक्षितयशाजी ने उत्तराध्ययन का वाचन करते हुए मनुष्य जीवन की दुर्लभता के बारे में बताया, साथ ही गणधरवाद व तेरापंथ के आचार्यों का सजीव चित्रण किया। सैकड़ों, अष्टप्रहरी व चतुर्थ प्रहरी पौषध हुए। पर्युषण साधना शिविर में 31 भाई-बहिनों ने भाग लेकर विशिष्ट साधना की।

सामूहिक क्षमायाचाना के उपलक्ष में साध्वी शकुन्तला कुमारी जी ने कहा- पर्युषण महापर्व का हृदय स्थल है- खमत खामणा। वीर पुरुष दूसरों के अप्रिय कटुवचनों को विस्मृत कर उसके साथ मित्रता स्थापित कर लेता है। इसलिए आज के दिन सब प्रेम से मिल-जुलकर रहने का प्रयास करें। साध्वी संचितयशा जी ने कहा- क्षमा दिवस पर संकल्प करें कि हमें अपने जीवन के प्रांगण में मैत्री के कल्पवृक्ष को सिंचन देना है। साध्वी रक्षितयशा जी ने मधुर स्वर लहरियों में मैत्री गीत का संगान किया। साध्वी जागृतप्रभा जी ने कहा- भूल चुभन है, क्षमा सुमन है। आठ दिवस के इस पर्युषण महापर्व, भगवती संवत्सरी एवं क्षमा याचना में विलेपार्ले, अंधेरी, सांताक्रुज, बांद्रा, खार और जोगेश्वरी के युवक परिषद्, महिला मंडल एवं सभा से अलग-अलग दिवसों पर संचालन, मंगलाचरण एवं रात्रि कालीन कार्यक्रमों में रोचक प्रस्तुतियों के साथ सराहनीय सहभागिता रही।

पश्चिम अहमदाबाद

साध्वी मधुस्मिताजी ठाणा 3 के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महापर्व का नवनीत आठवां दिन संवत्सरी एवं फल श्रुति क्षमापना दिवस बहुत ही आराधनामय रहा।

प्रातः काल से ही श्रावक-श्राविकाओं का उल्लास के साथ आगमन शुरू हो गया था। भगवान महावीर के जन्म से लेकर निर्वाण तक की यात्रा एवं इस बीच हुए कष्टों की साध्वी प्रदीपप्रभा जी, साध्वी सहजयशा जी, वरिष्ठ उपासिका रजनी बाई दूगड़ ने प्रस्तुति दी। साध्वी मधुस्मिता जी ने संवत्सरी महापर्व के महत्व को समझाया एवं चंदनबाला के व्याख्यान की प्रभावी प्रस्तुति दी। आपने कहा पर्युषण का अर्थ है विभाव से स्वभाव में आना, बाहर से भीतर में आना। यह आत्मचिंतन का पर्व है। अंतर्मन से क्षमा देने वाला आराधक बन जाता है। दूसरों की भूलों को भूलना एवं स्वयं की भूलों को याद रखकर क्षमा मांगना इस महापर्व की सार्थकता है। साध्वी मधुस्मिता जी ने तेरापंथ धर्म संघ की आचार्य परंपरा एवं साध्वी प्रमुखाओं के बारे में अपनी विशिष्ट शैली में विस्तृत विवेचन किया।

साध्वी सहजयशा जी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों की विस्तृत जानकारी दी। श्राविका रजनी देवी दुगड़ ने भगवान महावीर के जीवन काल के अंतिम वर्षों का सुन्दर वर्णन किया। अच्छी संख्या में आठ, छः एवं चार प्रहरी पौषध हुए। आठ एवं उससे ज्यादा की तपस्या करने वाले 21 तपस्वियों ने प्रत्याख्यान किया।

बरार, राजस्थान

उपासिका चंद्रा बडाला एवं सहयोगी उपासिका मीना धींग की उपस्थिति में तेरापंथ भवन बरार में पर्युषण महापर्व का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्रावक-श्राविकाओं ने पर्युषणकालीन आचार संहिता को पालन करने का संकल्प किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मण्डल ने महावीर स्तुति प्रस्तुत की। उपासिका चंद्रा बडाला ने कहा पर्युषण प्रकाशमय जीवन जीने का आव्हान करता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को हर क्षण हर पल जागरूक रहकर वीतराग वाणी का श्रवण कर अमृत रस का पान करना है। आपने चन्दनबाला तेले के तप की प्रेरणा देते हुए कहा- पर्युषण में तप त्याग की गंगा बहानी है। बाह्य आडम्बरों से हटकर भीतर की चेतना का दीप प्रज्ज्वलित करने के लिए खाने का संयम करना है।

उपासिका मीना धींग 'आओ पर्युषण मनावां' गीत का संगान किया व तेरापंथ धर्म संघ व प्रज्ञा पुरुष जयाचार्य के बारे में जानकारी दी। विविध प्रकार की क्विज प्रतियोगिता के माध्यम से ज्ञान वर्धन कराया गया।

मदुरै

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा से पर्युषण महापर्व के अंतर्गत धर्माराधना कराने हेतु प्रवक्ता उपासक पदमचंद आंचलिया एवं उपासक सुनील दुगड़ की उपस्थिति में स्थानीय तेरापंथ भवन में कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। सभी दिवसों के अनुसार प्रवचन आसान और प्रैक्टिकल कथाओं के माध्यम से उपासक द्वय ने समझाया। प्रतिक्रमण व रात्रि कालीन प्रवचन में तत्त्व ज्ञान, जिज्ञासा व कहानियों के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान दिया गया। सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक कार्यक्रम में 110 सामायिक हुई। मौन दिवस पर मौन पचरंगी और मौन साधना करवाई गई। जाप दिवस में 24 घंटे नमस्कार महामंत्र का अखंड जाप हुआ। अच्छी संख्या में तपस्या एवं पौषध की सुन्दर साधना हुई।

संवत्सरी महापर्व के अवसर पर ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों की सुन्दर प्रस्तुति हुई। मदुरै तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतम चंद गोलछा, ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा लता कोठारी, अभातेयुप सदस्य नितेश कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी बबिता लोढ़ा, तेरापंथ नेटवर्क सयोजक अक्षय लोढ़ा आदि ने संवत्सरी महापर्व पर अपने भाव रखे। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा गीतिका का संगान किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, तेमम, तेयुप का व्यवस्था में सक्रिय सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

भिवानी

मुनि देवेंद्र कुमार जी, तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी आदि ठाणा चार के सान्निध्य में पर्युषण पर्व की आराधना की गई। खाद्य संयम दिवस के अवसर पर मुनि देवेंद्रकुमार जी ने अपने उद्बोधन में विशेष प्रेरणा प्रदान की। मुनि पृथ्वीराज जी ने बताया कि संयम सबसे बड़ा धर्म है। अगर व्यक्ति भोजन में संयम रखता है तो कई दृष्टियों से स्वास्थ्य अच्छा रह सकता है। स्वाध्याय दिवस के अवसर पर मुनि देवेंद्रकुमार जी ने कहा सम्यक दर्शन की प्राप्ति दुर्लभ है। जिसे सम्यक दर्शन की पहचान हो जाए वह जीव मोक्ष में जाने वाला बन जाता है। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि यदि आज के राजनेता, समाज नेता अच्छी पुस्तकों का स्वाध्याय करें तो देश की तस्वीर बदल सकती है। सामायिक दिवस के अवसर पर अभिनव सामायिक के अंतर्गत त्रिपदी वंदना, ध्यान, जप, स्वाध्याय आदि का अभ्यास करवाया। मुनि पृथ्वीराजजी ने कहा- सामायिक मोक्ष का सैंपल है। स्वयं को देखने का, भीतर की ओर जाने का मार्ग है सामायिक। वाणी संयम दिवस के अवसर पर मुनि देवेंद्र कुमार जी स्वामी ने भगवान महावीर के 27 भवों का वर्णन प्रारंभ किया। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि वाणी के आधार पर ही व्यक्तित्व अंकन किया जा सकता है। मुनि देवेंद्र कुमार जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन किया। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि अणुव्रत व्यक्तित्व निर्माण का कारखाना है। जप दिवस के अवसर पर मुनि देवेंद्र कुमार जी ने जप का प्रयोग करवाया और भगवान महावीर के आगे के भवों का वर्णन किया। मुनि पृथ्वीराजजी ने कहा कि मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। जब तक मंत्र और साधक का सूक्ष्म शरीर एक रूप नहीं हो जाता तब तक साधक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। ध्यान दिवस के अवसर पर मुनि देवेंद्र कुमार जी ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। मुनि पृथ्वीराज जी ने के कायोत्सर्ग, ध्यान व दीर्ध श्वास का प्रयोग करवाया।

संवत्सरी महापर्व के अवसर पर मुनि देवेंद्रकुमार जी ने भगवान महावीर के जन्म, बाल्यावस्था, दीक्षा, साधना काल में आए परिषहों का वर्णन किया। चंदनबाला के समग्र जीवन पर प्रकाश डाला तथा संवत्सरी के महत्व का उल्लेख किया। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व जीवन में परिवर्तन करने, वैर की गांठ खोलने का, हृदय परिवर्तन का पर्व है। संवत्सरी महापर्व आध्यात्मिक संस्कृति का एक अनूठा और अलौकिक पर्व है। मुनि आर्जवकुमार जी ने महापर्व का शुभारंभ करते हुए पर्युषण पर्व की व्याख्या की तथा तीसरे प्रत्येक बुद्ध नमि राजर्षि के दीक्षा के निमित्त बनी घटना का वर्णन किया। क्षमापना दिवस पर मुनि देवेंद्र कुमार जी ने कहा- क्षमा वीरों का आभूषण है। आज के दिन हम अपने भीतर झांक कर राग द्वेष की ग्रंथियों को खत्म करें, यह मैत्री दिवस का शुभ संदेश है। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा- क्षमा आभ्यतंर तप है। क्षमा करने से हमारे मन का भार घटता है और हम अभय हो जाते हैं।

लुधियाना

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रणजी की सुशिष्या साध्वी कनकरेखाजी ने तुलसी कल्याण केन्द्र के परिसर में अध्यात्म परिषद् को संबोधित करते हुए कहा कि संयम की आराधना का महापर्व है पर्युषण। यह पर्व धर्म का दीप प्रज्वलित करने की प्रेरणा लेकर आता है। जैन धर्म का यह महान पर्व संपूर्ण मानव जाति के लिए जागरण का संदेश लेकर आता है।

खाद्य संयम दिवस- कार्यक्रम का शुभारंभ कन्यामंडल के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा हित-मित-सात्विक आहार करने वाला ही शारिरिक, मानसिक ओर भावनात्मक स्तर पर स्वस्थता व प्रसन्नता का अनुभव करता है। साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने विषय प्रस्तुति के साथ विचार रखे। कुशल संचालन अनमोल बाफना ने किया।

स्वाध्याय दिवस- साध्वी कनकरेखाजी ने उद्बोधन में कहा- स्वाध्याय एक महकता गुलशन है, जिसकी सौरभ से मन प्रसन्न होता है, विचारों की पवित्रता बढ़ती है। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। सम्यग ज्ञान की प्राप्ति के लिए आगम स्वाध्याय का विशेष महत्व बताया गया है। साध्वीश्री ने स्वाध्याय के महत्व को उजागर करते हुए ऐतिहासिक घटना प्रसंग सुनाएं। सुन्दरनगर की बहनों ने सुमधुर गीतिका का संगान किया व कुशल संचालन पूजा पुगलिया ने किया।

सामायिक दिवस- अभिनव सामायिक का अभिनव कार्यक्रम त्रिपदी वंदना के साथ प्रारंभ हुआ। साध्वी हेमंतप्रभाजी ने जप, ध्यान आदि चरण प्रयोग करवाए। स्वाध्याय प्रयोग के अन्तर्गत साध्वी कनकरेखाजी ने कहा- सामायिक का अर्थ है समता की साधना। वर्तमान में जिसकी अत्यंत आवश्यकता है। पाप की प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर प्रस्थान करने व तनावमुक्ति का साधन है सामायिक। इकबालगंज की अभिनव संगीत प्रस्तुति एवं गरिमा पटवा का कुशल संचालन हुआ।

वाणी संयम दिवस- महावीर स्तुति के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- सामजिक संबंधों का आईना है - वाणी। मौन से आन्तरिक शक्तियों का जागरण होता है। हमारी वाणी ही हमारे व्यक्तित्व की पहचान है। साध्वी संवरविभाजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। युवकों एवं बहनों ने वाणी संयम दिवस पर सुमधुर संगान किया। संचालन स्नेहा धाड़ीवाल ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस- तीर्थंकर स्तुति के साथ वातावरण को मंगल बनाते हुए साध्वीश्री ने अध्यात्म परिषद को सम्बोधित करते हुए कहा- अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों से चरित्र के ग्राफ को ऊंचा उठाया जाता है। जिससे व्यक्ति के भीतर संयम, सादगी, सदाचार आदि सद्गुणों का प्रवेश होता है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर मानव को मानवता की राह दिखाई। साध्वीश्री ने परिषद् को अणुवती बनने के लिए विशेष आह्वान किया। जैन कॉलोनी की युवती बहनों ने गीतिका का संगान किया। संचालन सरोज कोचर ने किया।

जप दिवस- पर्युषण कालीन अखंड जप की आराधना में भाई-बहनों का विशेष उत्साह बोल रहा था। कार्यक्रम के प्रथम चरण में प्रतिदिन भगवान ऋषभ और भगवान महावीर की भव परंपरा का रोचक वर्णन साध्वीश्री द्वारा किया गया। साध्वी श्री ने जप के प्रभाव से होने वाली रोमांचक घटनाओं का उल्लेख करते हुए जप के तीन प्रकार बताए- वाचिक, उपांशु व मानस। संचालन प्रिया श्यामसुखा ने किया। साध्वी हेमंतप्रभाजी ने जप विधि का महत्व बताया।

ध्यान दिवस- कार्यक्रम का शुभारंभ युवा टीम के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्री ने कहा जिंदगी की भागदौड़ में टेंशन मुक्ति का सुंदर आयाम है- प्रेक्षाध्यान। गुरूदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान का अवदान देकर सम्पूर्ण मानव जाती को जीने की कला सिखाई।साध्वी हेमंतप्रभाजी ने ध्यान की चर्चा की। संचालन तेयुप मंत्री प्रतीक कोचर ने किया।

भगवती संवत्सरी महापर्व- पर्वाधिराज महापर्व संवत्सरी का कार्यक्रम उल्लास भरे वातावरण में सम्पन्न हुआ। महावीर सुतुति के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह पर्व तप त्याग की नई प्रेरणा, नई उर्जा लेकर अध्यात्म चेतना को जागृत करने आया है। यह आत्मशुद्धि के साथ आत्मानंद की अनुभूति करवाता है। साध्वीश्री ने भगवान महावीर के साधनाकाल का रोचक वर्णन सुनाया।

इससे पूर्व साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने अनाथी मुनि का आख्यान सुनाया। साध्वी संवरविभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी ने 'इतिहास की अपूर्व धरोहर' गणधरवाद व प्रभावक आचार्यों के घटनाक्रम से अवगत कराया। तेरापंथ महिला मंडल ने तेरापंथ आचार्यों के स्वर्णिम इतिहास की अभिराम झलक प्रस्तुत की। श्रद्धा दुगड़ ने कुशल संचालन किया।

मैत्री पर्व - तप अनुमोदना 108 तेलों के साथ: मैत्री दिवस पर साध्वी कनकरेखाजी ने अध्यात्म परिषद को सम्बोधित करते हुए कहा- राग-द्वेष की ग्रंथि का भेदन कर सरल हृदय से हमें क्षमायाचना करने का शुभ संदेश लाया है- मैत्री पर्व। आज के दिन हम मैत्री, प्रेम व पारस्परिक व्यवहार कर क्षमा का आदान-प्रदान करें। इस महापर्व की आराधना में लुधियाना में पहली बार 108 तेले, दो पचंरगी तप, पर्युषण काल में सानंद सम्पन्न हुए। संवत्सरी के दिन सैंकडों उपवास के साथ करीब 151 पौषध व्रत की आराधना हुई। सभा, महिला मंडल व तेयुप पदाधिकरयों ने विचार व्यक्त किये।

मण्डिया

साध्वी संयमलता जी ने पर्युषण पर्व की महत्ता बताते हुए कहा- जिस प्रकार मंत्रों में नवकार महामंत्र, रत्नों में चिन्तामणि रत्न, रसायनों में अमृत रसायन, महिनों में भाद्रवा महिना सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार पर्वो में पर्युषण महापर्व सर्वश्रेष्ठ है। पर्युषण महापर्व त्याग व तप से, सामायिक व पौषध से आत्मा को संवारने का पर्व है।

खाद्य संयम दिवस - साध्वी संयमलताजी ने कहा- अति खाना हमारी सेन्चुरी को हाफ-सेन्चुरी बना देता है। साध्वी मार्दश्रीजी ने कहा भारतीय संस्कृति में जैन धर्म सर्वोत्कृष्ट धर्म है ,जो आज भी जीवंत है, प्रांसगिक है। कन्या मण्डल ने संयम एक्सप्रेस रूपी प्रस्तुति से पर्युषण में करणीय कार्यों को प्रस्तुत किया।

स्वाध्याय दिवस- साध्वी संयमलता जी ने भगवान महावीर के 27 भवों की यात्रा का वर्णन करते हुए जीवनयात्रा के प्रथम पड़ाव एवं सम्यक्त्व के बारे में चर्चा करते हुए स्वाध्याय की प्रेरणा दी। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने दान, शील, तप एवं भावना के बारे में समझाया।

सामायिक दिवस- अभिनव सामायिक कराते हुए साध्वीश्री ने प्रेरणा दी कि वर्तमान जन-जीवन की दिनचर्या अनियमित है। लोग कहते हैं हम व्यस्त हैं, लेकिन वे व्यस्त नहीं अस्त-व्यस्त हैं। सामायिक हमारे मन व बुद्धि को विराम देने वाली है, विचारों की भीड़ से अलग करने वाली है। साध्वी श्री ने मरीचि के भव का वर्णन किया। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा कि प्रकृति, पदार्थ व व्यक्तिगत जगत में समता रखने वाला सुख-समृद्धि को प्राप्त करता है।

वाणी संयम दिवस - वाणी हमारे व्यक्तित्व को दर्शाती है। वाणी sugar-free न होकर sugar-full होने से परिवार को स्वर्ग बना देती है। हित, मित, मधु वचन व्यक्ति को सफलता के शिखर पर पहुंचा देते हैं। साध्वी श्री ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन प्रस्तुत किया। साध्वी रौनकप्रभा जी ने भक्तामर की उपयोगिता को बताया। श्रावक-श्राविकाओं में मौन पचरंगी का आयोजन हुआ।

अणुव्रत चेतना दिवस - साध्वीश्री ने कहा- छोटे- छोटे व्रतों से जीवन सुखी व वैभवशाली बनता है। संयम हमें शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक सभी रोगों से मुक्त बनाता है। भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंग में उनकी आत्मा के 16वें भव में किए गए निदान और वैर के अनुबंध को प्रस्तुत किया। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने कहा- मूर्छा का त्याग ही परिग्रह का त्याग है व संयम के सोपान की प्रथम सीढ़ी है।

जप दिवस - मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। मनोयोगपूर्वक किया गया जप, शक्तियों को प्रकट करता है। मंत्र एक कवच है जो बाहरी शक्तियों को झेलने में समर्थ होता है।

ध्यान दिवस - साध्वी संयमलता जी ने कहा - ध्यान एक प्रकार का आहार है जो अन्तर को पुष्ट करता है। प्रत्येक कार्य करते समय उसी में एकाग्र हो जाना, तल्लीन हो जाना ही ध्यान है। ध्यान मन को निर्मल बनाता है, इसी निर्मलता से अतिमुक्तक, स्थूलिभद्र, मरुदेवा माता भवसागर से तर गए। महावीर के पूर्व भवों का वर्णन करते हुए तीर्थंकर गोत्र का बन्धन करने वाले नन्दन के भव में किए गए 11,60,000 मासखमण के बारे में बताया। साध्वी मार्दवश्री ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा - ध्यान आत्मज्ञान पाने की कुंजी है। सभी तीर्थकर अपने साधना काल में ध्यान कर केवलज्ञानी बने।

भगवती संवत्सरी महापर्व - साध्वी संयमलताजी ने सैकडों उपवासी भाई-बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा - आज बाहरी सौन्दर्य नहीं, भीतरी सौन्दर्य को देखने का पर्व है, स्वयं के भीतर पुरुषार्थ जगाने का पर्व है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

संबोधि

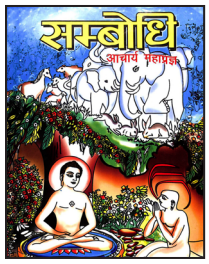

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

धर्म जीवन का एक आवश्यक अंग है। इसे जो भूलता है, वह अपने आपको भूलता है। जीवन के लिए अन्य कार्य आवश्यक हैं, वैसे धर्म भी। जो इसे जानता है और विश्वास करता है, वह धर्म का आचरण भी करता है। धर्म केवल जानने का ही विषय नहीं है, वह आचरण का भी विषय है। प्रत्येक कार्य में धर्म को सामने रखा जाए तो मनुष्य अनैतिक और अधार्मिक नहीं हो सकता।

आत्मा का एक शरीर में नियत-वास नहीं है। आस्तिक इसे स्वीकार करते हैं इसलिए वे यह भी स्वीकार करते हैं कि हिंसा किसी अन्य की नहीं, अपनी ही होती है। हिंसा के निमित्त हैं-राग, द्वेष, मोह, प्रमाद आदि।

श्रुत और आचार की उपासना आत्म-धर्म है। श्रुत और आचार से भिन्न धर्म कर्त्तव्य और स्वभाव की दृष्टि से है। आत्म-विकास में वे सहयोगी नहीं बनते। मोक्ष श्रुत और आचरण का योग है। आत्मा का विकास इन्हीं के द्वारा होता है। इस अध्याय में ये ही विवेच्य विषय हैं।

भगवान् प्राह

१. यावद् देहो भवेत् पुंसां, तावत्कर्मापि जायते।
कुर्वन्नावश्यकं कर्म, धर्ममप्याचरेद् गृही॥

भगवान् ने कहा–जब तक मनुष्य के शरीर होता है तब तक क्रिया होती है। आवश्यक क्रिया को करता हुआ मनुष्य धर्म का भी आचरण करे।

'किं कर्म किमकर्म च कवयोप्यत्रमोहिताः।' गीता में कहा है-'कर्म क्या है और अकर्म क्या है? इस निर्णय में बड़े-बड़े विद्वान भी मूढ़ हो जाते हैं।' कर्म वस्तु का स्वभाव है। जो स्वभाव है वह किया नहीं जाता, प्रतिक्षण होता रहता है। इसलिए उसे अकर्म-अक्रिया कहा जाता है। अकर्म को कर्म के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। **'अकम्मुणा कम्म खवेंति धीरा'** धीर व्यक्ति अकर्म के द्वारा कर्म (विजातीय) को नष्ट कर स्वभाव में प्रतिष्ठित होते हैं। कुछ कर्म निषिद्ध हैं और कुछ विहित, किन्तु अकर्म की दृष्टि से दोनों ही अविहित हैं। अकर्म की स्थिति प्राप्त न हो तब विहित कर्म व्यक्ति करता है, किन्तु जो अकर्म के मर्म को जानता है वह कर्म करता हुआ भी अकर्म रहता है। सामान्यतया यह कठिन है। मनुष्य कर्म करता है अकर्म को भूलकर। कर्तृत्व का अहंकार और बाह्य प्रेरणाएं कर्म के लिए प्रेरित करती है। जिसे अकर्म का बोध नहीं है, वह कर्म के फल से भी सहजतया मुक्त नहीं हो सकता। यश, प्रतिष्ठा, सम्मान आदि में वह प्रसन्न हो जाता है और विपरीत में अप्रसन्न। अहंकार को रस प्रदर्शन में आता है, अपनी विशिष्टता का बोध दूसरों को हो वह बताना चाहता है। अकर्म का साधक कर्म में रस नहीं लेता। वह सिर्फ अपने को एक निमित्त समझेगा और कर्म का साक्षी, द्रष्टा रहेगा। अकर्म की साधना है-आप स्वयं कुछ करें नहीं, आप सिर्फ जो पीछे अकर्मक खड़ा है, उसे देखते रहें। जेन साधक लिंची ने अपने शिष्यों से कहा अगर चित्र बनाने में तुम्हें जरा भी श्रम मालूम पड़े तो समझना अभी कलाकार नहीं हुए हो। जिस दिन श्रम का पता न लगे उसी दिन कलाकार बनोगे।'

जर्मन विचारक हैरीगेली धनुर्विद्या सीखने जापान आया। तीन साल श्रम किया। अचूक निशानेबाज हो गया। फिर भी गुरु ने कहा–अभी कुछ नहीं हुआ। अभी तू चलाता है, तीर चलता नहीं। थक गया। कहा–अब मैं आज जाता हूं। उसने घर जाने की सब तैयारी कर ली। विदा लेने आया। गुरु सिखा रहे थे। बैठ गया। अचानक उठा और तीर उठाकर चल दिया। गुरु ने कहा–हो गया काम। इतने दिन प्रयत्न में था, आज अप्रयत्न में।' साधक के लिए यह बहुत बड़ा पाठ है जो उसे पढ़ना है।

२. यथाहारादि कर्माणि, भवन्त्यावश्यकानि च।
तथात्माराधनं चापि, भवेदावश्यकं परम्॥

जिस प्रकार भोजन आदि क्रियाएं आवश्यक होती हैं, उसी प्रकार आत्मा की साधना करना भी अत्यंत आवश्यक है। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

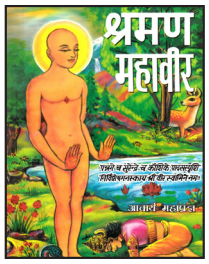

प्रगति के संकेत

२. भगवान् गंडकी नदी को नौका से पार कर वाणिज्यग्राम आए। उसके बाह्य भाग में एक रमणीय और एकान्त प्रदेश था। भगवान् वहां स्थित होकर ध्यानलीन हो गए। उस गांव में आनंद नामक गृहस्थ रहता था। वह भगवान् पार्श्व की परम्परा का अनुयायी था। वह दो-दो उपवास की तपस्या और सूर्य के आतप का आसेवन कर रहा था। उसे इस प्रक्रिया से अतीन्द्रियज्ञान (अवधिज्ञान) उपलब्ध हो गया।

वाणिज्यग्राम के बाह्य भाग में भगवान् की उपस्थिति का बोध होने पर वह वहां आया। भगवान् के चरणों में प्रणिपात कर बोला, 'भंते! अनुत्तर है आप की कायगुप्ति, अनुत्तर है आपकी वचनगुप्ति और अनुत्तर है आपकी मनोगुप्ति। भन्ते ! मुझे स्पष्ट दीख रहा है कि आपको कुछ वर्षों के बाद कैवल्य प्राप्त होगा।

भगवान् कैवल्य की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। उसके संकेत वातावरण में तैरने लग गए।

करुणा का अजस्त्र स्रोत

वर्षा ने विदा ले ली। शरद् का प्रवेश-द्वार खुल गया। हरियाली का विस्तार कम हो गया। पथ प्रशस्त हो गए। भगवान् महावीर अस्थिकग्राम से प्रस्थान कर मोराक सन्निवेश पहुंचे। बाहर के उद्यान में ठहरे।

उस सन्निवेश में अच्छंदक नामक तपस्वी रहते थे। वे ज्योतिष, वशीकरण, मंत्र-तंत्र आदि विद्याओं में कुशल थे। अतः अच्छंदक की वहां बहुत प्रसिद्धि थी। जनता उसके चमत्कारों से बहुत प्रभावित थी।

उद्यानपालक ने देखा कोई तपस्वी ध्यान किए खड़ा है। उसने दूसरे दिन फिर देखा कि तपस्वी वैसे ही खड़ा है। उसके मन में श्रद्धा जाग गई। उसने सन्निवेश के लोगों को सूचना दी। लोग आने लगे। भगवान् ने ध्यान और मौन का क्रम नहीं तोड़ा। फिर भी लोग आते और कुछ समय उपासना कर चले जाते। वे भगवान् की ध्यान–मुद्रा पर मुग्ध हो गए। भगवान् की सन्निधि उनके शांति का स्रोत बन गई।

सन्निवेश की जनता का झुकाव भगवान् की ओर देख अच्छंदक विचलित हो उठा। उसने भगवान् को पराजित करने का उपाय सोचा। वह अपने समर्थकों को साथ ले भगवान् के सामने उपस्थित हो गया।

भगवान् आत्म-दर्शन की उस गहराई में निमग्न थे जहां जय-पराजय का अस्तित्व ही नहीं है। अच्छंदक तपस्वी का मन जय-पराजय के झूले में झूल रहा था। वह बोला, 'तरुण तपस्वी! मौन क्यों खड़े हो? यदि तुम ज्ञानी हो तो मेरे प्रश्न का उत्तर दो। मेरे हाथ में यह तिनका है। यह अभी टूटेगा या नहीं टूटेगा?' इतना कहने पर भी भगवान् का ध्यान भंग नहीं हुआ।

सिद्धार्थ भगवान् का भक्त था। वह कुछ दिनों से भगवान् की सन्निधि में रह रहा था। वह अतिशयज्ञानी था। उसने कहा, 'अच्छंदक! इतने सीधे प्रश्न का उत्तर पाने के लिए भगवान् का ध्यान भंग करने की क्या आवश्यकता है? इसका सीधा-सा उत्तर है। वह मैं ही बता देता हूं। यह तिनका जड़ है। इसमें अपना कर्तृत्व नहीं है। अतः तुम इसे तोड़ना चाहो तो टूट जाएगा और नहीं चाहो तो नहीं टूटेगा। 'उपस्थित जनता ने कहा, 'अच्छंदक इतनी सीधी सरल बात को भी नहीं जानता तब गूढ़ तत्त्व को क्या जानता होगा? जनमानस में उसके आदर की प्रतिमा खंडित हो गई। साथ-साथ उसके चिंतन की प्रतिमा भी खंडित हो गई। उसने सोचा था-महावीर कहेंगे कि तिनका टूट जाएगा तो मैं इसे नहीं तोडूंगा और वे कहेंगे कि नहीं टूटेगा तो मैं इसे तोड़ दूंगा। दोनों ओर उनकी पराजय होगी। किन्तु जो महावीर को पराजित करने वाला था, वह जनता की संसद में स्वयं पराजित हो गया। (क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अहिंसा समयं चेव

सामान्य साधु की ही बात नहीं, केवलज्ञानी मुनि के द्वारा भी जीवहिंसा हो सकती है। विशेष बात यही कि उस हिंसा से केवली के पापकर्म का बन्ध नहीं होता, अपितु उस समय पुण्यबन्ध सम्मत है। हालांकि पुण्यबन्ध का कारण वह हिंसा नहीं है, शुभयोग उसका हेतु बनता है। और अधिक विश्लेषण करें तो शुभयोग आश्रव पुण्यबन्ध का हेतु बनता है, यह तथ्य सामने आता है। एक ही शुभयोग के दो रूप और दो कार्य हैं शुभयोग आश्रव और शुभयोग निर्जरा। पुण्यबन्ध का कारण शुभयोग का आश्रव-रूप है और आत्म-उज्ज्वलता का कारण शुभयोग का निर्जरात्मक रूप है। शुभयोग के निर्जरात्मक स्वरूप का विशेष कारण मोहकर्म का विलय है और उसके आश्रवात्मक रूप का विशेष कारण नाम कर्म का उदय है।

प्राणव्यपरोपणात्मक (द्रव्य) हिंसा तो केवली के निमित्त से भी संभाव्य है, परन्तु राग द्वेषात्मक भाव हिंसा केवली अथवा वीतराग से कभी नहीं हो सकती। जब तक मन में रागद्वेषात्मक प्रवृत्ति रहती है, वीतरागता तो दूर, अप्रमाद की भूमिका भी प्राप्त नहीं हो सकती। इस चर्चा का निष्कर्ष यह है कि धर्म की सर्वथा अटूट कसौटी समता/रागद्वेषमुक्तता है। उसके बिना न वीतरागता प्राप्त हो सकती है, न केवलिता और न अप्रमत्तता। अप्रमत्त अवस्था के लिए भी मन का रागद्वेषमुक्त होना अनिवार्य है।

अहिंसा धर्म की सापेक्ष कसौटी है, निरपेक्ष नहीं। हिंसा (प्राणातिपात) के न होने पर भी पापबन्धन हो जाता है और कभी उसके होने पर भी उन क्षणों में पापबन्धन नहीं होता। प्रमादी/अजागरूक मुनि चल रहा है। उसके पैर से कोई जीव नहीं मरा, फिर भी उसके पाप का बन्धन हो जाता है।

समता धर्म की निरपेक्ष कसौटी है। जहां भी विषमता/राग-द्वेष है, वह अधर्म है। जहां भी समता है, रागद्वेष मुक्ति है, वह धर्म है। यह समता विशुद्ध अहिंसा है, विशुद्ध धर्म है। सब प्राणियों के प्रति मैत्री-भाव, सबके कल्याण की भावना, सहज दया (किसी को मेरी ओर से कष्ट न हो, वैसा प्रयास व भाव)- मन व आत्मा को पवित्र बनाने वाला चिन्तन अहिंसा का विधायक पक्ष है।

केवल प्राणवध ही हिंसा की सीमा नहीं है। उसका परिवार बड़ा है। किसी को मारने का संकल्प/चिन्तन करना भी हिंसा का ही एक प्रकार है। एक पुरुष मृग को मारने के लिए बाण चलाने की मुद्रा में है। इस स्थिति में कोई दूसरा मनुष्य आकर उस पुरुष का तलवार से शिरश्छेद कर डालता है। उस प्रियमाण पुरुष के हाथ से बाण छूटता है और सम्मुखीन मृग मर जाता है।

यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि उस मृग का हन्ता किसे माना जाए? धनुर्धर व्यक्ति को अथवा धनुर्धर को मारने वाले दूसरे व्यक्ति को?

धनुर्धर को मारने वाले व्यक्ति के मन में मृग को मारने का संकल्प नहीं था, इसलिए वह मृगवैर के पाप से स्पृष्ट नहीं होता। धनुर्धर व्यक्ति के मन में मृग को मारने का संकल्प था। उसने प्रत्यञ्चा पर बाण को मृगवध के उद्देश्य से चढ़ाया था। वह मृगवध की प्रक्रिया में प्रवृत्त भी हो चुका था। इसलिए मृगवैर के पाप से धनुर्धर व्यक्ति स्पृष्ट होता है, न कि धनुर्धर को मारने वाला व्यक्ति। इस अर्थ में मृग का मुख्य हन्ता भी धनुर्धर ही है।

कर्मबन्ध में भाव (चित्तवृत्ति) ही प्रधान हेतु बनता है। स्थूल क्रिया गौण है, भाव प्रधान है। क्रिया एक ही प्रकार की होती है, किन्तु भाव की भिन्नता के कारण बन्धन भिन्न-भिन्न होता है। कषाय की तीव्रता और मन्दता कर्मफल की तीव्रता और मन्दता का कारण बनता है। कहा भी गया है-

यादृशी चित्तवृत्तिः स्यात्, तादृक् कर्मफलं नृणाम्।
परलोके गतिस्ताट्टक, प्रतीतिः फलदायिका।।

जैसी चित्तवृत्ति होती है, वैसा ही कर्म का फल मिलता है और वैसी ही परलोक में गति होती है। भावना ही प्रमुखतया फलदायी होती है। कर्म अपने कर्ता को ही फल देता है, भले वह कहीं भी क्यों न चला जाए। पूर्ण प्राणातिपातविरमण नौ कोटि (तीन करण तीन योग से) से होता है-१. प्राणातिपात करना नहीं मन से २. वचन से ३. काय से ४. प्राणातिपात करवाना नहीं मन से ५. वचन से ६. काय से ७. प्राणातिपात करने वाले का अनुमोदन करना नहीं मन से ८ वचन से ६ काय से।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री खूबचंदजी (खूमजी) (ताल) दीक्षा क्रमांक 145

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास, बेले, तेले तो बहुत किये। शेष तप इस प्रकार है- 4/2, 31/1, 41/1, 47/1, 52/1, 75/2, 85/1, 193/1।

– साभार: शासन समुद्र –

अक्टूबर 2024
सप्ताह के विशेष दिन

17 अक्टूबर
भगवान नमिनाथ च्यवन कल्याणक एवं पक्खी

20 अक्टूबर
आचार्यश्री माणकलाल जी महाप्रयाण दिवस

संघीय समाचारों का
मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.org

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024
हे प्रभो! यह तेरापंथ

31वें विकास महोत्सव के विविध कार्यक्रम

चेम्बूर, मुंबई

तेरापंथ भवन में आयोजित विकास महोत्सव कार्यक्रम में साध्वी राकेशकुमारीजी ने कहा - अध्यात्म विकास की गंगोत्री अनवरत बहाने वाले, उत्कृष्ट साधना के शिखर पुरुष युग प्रधान आचार्यश्री तुलसी कालजयी व्यक्तित्व थे। उनकी यशोगाथा दिगदिगन्त में गूंज रही है। वे असंप्रदायिक धर्म के मंत्रदाता थे। उन्होंने धर्म को मठों, पंथों एवं ग्रंथों से निकाल कर जीवन व्यवहार में, दिनचर्या का अंग बनाने का महनीय काम किया। साध्वी मलयविभाजी ने कहा- राष्ट्रीय संत तुलसी का जीवन सतरंगी जामा लिए हुए था। विश्व क्षितिज पर विकास के नये-नये आयाम खोले, वे वात्सल्य के महास्रोत थे। साध्वी विपुलयशाजी ने कहा- प्रज्ञा, प्रेम, प्रोत्साहन, प्रबन्धन, पराक्रम ये आचार्य तुलसी के जीवन सूत्र थे। सभाध्यक्ष वंशीलाल पटवारी एवं रमेश धोका ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजसमन्द

साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में विकास-महोत्सव का आयोजन भिक्षु बोधि स्थल, राजसमन्द में रखा गया। सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी लब्धियशा जी ने कहा- विकास महोत्सव आचार्य श्री तुलसी के विकास की गाथा है। आचार्य तुलसी विश्व की उन महान विभूतियों में से एक हैं जिन्होंने मानवता की सेवा में अपने आप को सर्वात्मना समर्पित कर दिया। आपने प्रत्येक दशक में नया काम करके गण के भण्डार को भर दिया। अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान, आगम सम्पादन, समण श्रेणी, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, नया मोड़, जैनी जीवन शैली, साहित्य सर्जन, आदि अनेक अवदानों के प्रति पूरा संघ प्रणत है। आचार्य तुलसी गति, प्रकाश, और ऊर्जा के पर्याय थे। इस अवसर पर साध्वी गौरवप्रभा जी, साध्वी कौशलप्रभा जी ने अपने विचार रखे।

महिला मण्डल राजनगर द्वारा 'गाथा विकास की हम आज सुनाते हैं' गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। इस क्रम में भिक्षु बोधि स्थल अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा, महिला मण्डल अध्यक्षा सुधा कोठारी ने अपने विचार रखे। तुलसी अष्टकम द्वारा महिला मण्डल ने मंगलाचरण किया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष विकास मादरेचा तथा संयोजन डोली बड़ोला ने किया। रात्रिकालिन कार्यक्रम के अन्तर्गत विविध भारती कार्यक्रम का आयोजन रखा गया जिसमें अनेक भाई-बहनों ने गीत, कविता, वक्तव्य आदि के द्वारा आचार्य श्री तुलसी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कन्या मण्डल राजनगर द्वारा सुन्दर एकांकी प्रस्तुत की गई।

मण्डिया

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुवात तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया ने मंगलाचरण से की। सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी संयमलताजी ने कहा- आचार्य तुलसी तेरापंथ की धरती पर भोर की किरण बन उतरे, धूप की भांति खिले एवं प्रचंड सूर्य की भांति तपते हुए विश्व की तमिस्त्रा को उजालों से भरा। ऐसे 20 वीं सदी के महानायक, ख्यातनामा धर्मगुरु, समाज सुधारक की कड़ी में अपने आप को प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठित करने वाले महामानव थे आचार्य तुलसी। आचार्य तुलसी का पट्टोत्सव विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस महोत्सव का आधार संघीय विकास है। कोई भी संगठन, चाहे सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक हो उसका विकास उसके अनुशासन में है।

साध्वी मनीषाप्रभाजी ने कहा- आचार्य तुलसी विश्व संत हैं जिन्होंने अनेक अवदान दिए जो संघ को विकास के शिखर पर पहुंचा रहे हैं। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी अलौकिक शक्तियों के पुञ्ज हैं। साध्वीवृंद ने सामुहिक गीत का संगान किया। संघ गान से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चेन्नई

विकास महोत्सव के अवसर पर मुनि हिमांशुकुमारजी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए महापुरुषों के गुणों और उनके समाज के प्रति योगदान पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने कहा- महापुरुष वह होते हैं जो हर परिस्थिति में समत्व की साधना करते हैं, चाहे वह सम्मान हो या अपमान। समत्व का यह गुण उन्हें संतुलित बनाए रखता है और विपरीत परिस्थितियों में भी समाज को कुछ नया देने की क्षमता प्रदान करता है। आचार्य श्री तुलसी ने इसी गुण को अपनाते हुए समाज और राष्ट्र के लिए अद्वितीय योगदान दिया। मुनि हेमंत कुमार ने भी अपने विचार रखते हुए कहा, विकास के लिए लक्ष्य की स्पष्टता और उससे जुड़े सम्यक पुरुषार्थ का होना आवश्यक है। विकास के मार्ग में आने वाली चुनौतियां हमें सावधान रहने और सही दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। जब तक हम अपनी इच्छाओं से बंधे रहते हैं, लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाती है।

गांधीनगर, बेंगलुरु

31वें विकास महोत्सव पर साध्वी उदितयशाजी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा- गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी विकास के पुरोधा थे। तेरापंथ धर्म संघ में हम जो विकास देख रहे हैं, वह गुरुदेव के नूतन चिंतन और कल्पनाशील मस्तिष्क का परिणाम है। ऐसा कौन सा क्षेत्र है जिसमें विकास पुरुष तुलसी की शक्ति नहीं लगी हो, वह कार्यकर्ताओं, श्रावक-श्राविकाओं, मुमुक्षुओं सभी का विकास चाहते थे। वे खुली आंख से सपने लेने वाले जादूगर थे, उन्होंने हम सबके निर्माण के लिए बहुत परिश्रम किया। साध्वी संगीतप्रभाजी ने गुरुदेव तुलसी को वचन सिद्ध योगी बताते हुए उनके जीवन प्रसंगों की चर्चा की एवं भावपूर्ण संगीत की स्वर लहरियों के द्वारा श्रद्धा अर्पित की। साध्वी भव्ययशाजी ने इस अवसर पर संकल्प की चेतना को जगाने का आह्वान किया। साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने सुमधुर संगान के द्वारा श्रद्धा अर्पित की। सभाध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य के साथ सदी के महानायक के साथ जुड़े संस्मरणों को बताया। महासभा सदस्य प्रकाश लोढ़ा एवं सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

माधावरम्

चेन्नई। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तीर्थंकर समवसरण, जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई में 31वें 'विकास महोत्सव' का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने कहा कि विकास उर्ध्वारोहण की प्रक्रिया है। बीज का विकास बरगद है, नींव का विकास उसकी मंजिल है। नींव कमजोर हो तो विकास का सपना व्यर्थ है। आचार्य भिक्षु ने बीज बोया, उसे पल्लवित करने में अनेक आचार्यों का योगदान रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ ने अकल्पनीय सर्वांगीण विकास किया। उसमें आचार्य श्री तुलसी का श्रम, प्रेरणा और प्रोत्साहन आधार बना। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि जिसके पास कर्मजाशक्ति, निर्णयशक्ति, इच्छाशक्ति और पुरुषार्थशक्ति हो तो वह विकास के चरम शिखर पर पहुंच सकता है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुत दी। प्रेक्षा प्रशिक्षक माणकचंद रांका, उपासिका संगीता डागा, सुरेश रांका ने भी इस विषय पर अपने विचार रखें। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया।

कालू

साध्वी उज्जवलरेखाजी के सान्निध्य में आयोजित विकास महोत्सव कार्यक्रम में साध्वीश्री ने कहा- वैज्ञानिक युग में कोई व्यक्ति, परिवार या समाज सफलता का जीवन जीने का अभीप्सु है, जीना चाहता है तो उसे दो बातों पर पहले ध्यान केंद्रित करना होगा - मर्यादा और अनुशासन। जहां इन दो तत्त्वों को गौण किया जाता है, वह व्यक्ति हो अथवा संगठन कभी भी प्रगति, विकास नहीं कर पाता। तेरापंथ धर्म संघ एक जीवंत, प्राणवान, दीर्घजीवी संघ है। जहां प्राणवत्ता है, वहीं विकास है। तेरापंथ धर्म संघ सौभाग्यशाली है जहां विकास की निरंतर प्रक्रिया जारी है। गुरुदेव श्री तुलसी ने अपने शासनकाल में संघ में शिक्षा, शोध, कला, साहित्य, सामाजिक संस्थाएं, जीवन विज्ञान, विसर्जन, नया मोड़, अहिंसा प्रशिक्षण, अणुव्रत, जैन विश्व भारती जैसे महान कार्यों के द्वारा विकास के नए क्षितिज खोल दिए। विकास महोत्सव तेरापंथ की गति प्रगति का प्रतिक है। साध्वी हेमप्रभा जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी विकास पुरुष थे।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में शान्ति निकेतन सेवा केन्द्र गंगाशहर में साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में 31वां विकास महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी सन् 1936 में तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य बने। सन् 1994 में अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद का दायित्व सौंपकर एक ऐतिहासिक आदर्श उपस्थित किया। आचार्य तुलसी ने 60 वर्षों तक अनवरत प्रगति के शिखर पर आरुढ होकर, संगठन में विकास के नए-नए क्षितिज खोलकर, संगठन के सदस्यों का अखंड विश्वास प्राप्त कर, प्रभावी कर्तव्य की छाप छोड़कर सब दिशाओं में बढ़ते हुए वर्चस्व की स्थिति में नेतृत्व की क्षमता होने पर भी, अचानक सुनियोजित रूप से अपने पद का विसर्जन कर प्रेरणादायी इतिहास बना गये। आचार्य श्री तुलसी ने अपने शासनकाल में जितना कार्य किया संभवतः इस शताब्दी में जैन परंपरा में किसी आचार्य ने इतना प्रभावी कार्य एवं नेतृत्व किया है, यह शोध का विषय है। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ के संस्थापक आचार्य थे। तेरापंथ की गौरवशाली आचार्य परंपरा में नवमें स्थान पर आचार्य तुलसी का नाम है जो मानवता के मसीहा बनकर जन-जन की आस्था के केंद्र बन गये। एक संप्रदाय की सीमा में रहकर भी संपूर्ण मानव जाति के लिए काम करने वाले वे जैन संत महान परिवार्जक थे। आचार्य तुलसी महान समाज सुधारक थे। आगम साहित्य का शोध और प्रकाशन गुरुदेव तुलसी की जैन साहित्य को अनुपम भेंट है। कार्यक्रम में साध्वी स्वस्थप्रभाजी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में साध्वी मध्यस्थप्रभाजी ने तथा साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप में एक गीतिका का संगान किया। मंगलाचरण पवन छाजेड ने किया। तेरापंथ युवक परिषद से रोहित बैद, तेरापंथी सभा गंगाशहर के मंत्री जतन लाल संचेती, अणुव्रत समिति से करणी दान रांका, महिला मण्डल से मीनाक्षी आंचलिया, आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान से दीपक आंचलिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रेम बोथरा ने किया।

दादर, मुंबई

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' ठाणा 5 के सान्निध्य में 31 वें विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के बाद उपासिका मंजु मारू, स्नेहलना कोठारी, इंदु धाकड आदि बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी विद्यावतीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- आचार्य तुलसी ने विकास के कई आयाम दिये। स्वयं का विकास, संघ का विकास, समाज का विकास एवं राष्ट्र का विकास हो इसके लिए गुरुदेव तुलसी ने जैन जीवन शैली, नया मोड, विसर्जन, अणुव्रत आंदोलन आदि कई सूत्र दिये। मृत्युभोज सामाजिक कुरुदियों आदि को मिटाने के लिए जागरण का आह्वान किया।

साध्वी प्रियंवदाजी ने कहा- गुरुदेव तुलसी से जुडा हुआ यह विकास महोत्सव विकास का सिंहावलोकन कराता है। साध्वी मृदुयशाजी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी ऋद्धियशाजी ने गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त विकास के बिंदुओं पर प्रकाश डाला। उपासक गणपतलाल मारू एवं छोटुलाल सुराणा ने क्रमशः वक्तव्य एवं गीत द्वारा मनोभाव प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

31वें विकास महोत्सव के विविध कार्यक्रम

हिरियुर

साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन स्थानीय तेरापन्थ भवन में किया गया। साध्वीश्री ने फरमाया कि व्यक्ति के जीवन में विकास की महत्ता होती है। लेकिन विकास की पृष्ठभूमि मजबूत रहनी चाहिए, नींव मजबूत होती है तो मकान भी मजबूत होता है। मौलिकता को रखते हुए नया विकास होना चाहिए। आचार्य तुलसी ने केवल तेरापंथ का ही विकास नहीं किया अपितु जैन शासन व मानवता के उत्थान के लिए भी बहुत कार्य किया। आचार्य रहते हुए अपने पद का विसर्जन कर इतिहास में उन्होने अद्वितीय उदाहरण पेश किया। साध्वी उन्नतयशाजी ने कहा- आचार्य तुलसी का जीवन क्रांति का जीवन था। पतझड़ में अगर कोई पेड़ हरा भरा रहे तो वो चमत्कारी बन जाता है। आचार्य तुलसी भी वैसे ही थे। उनके जीवन में कई पतझड़ आये, तूफान आये लेकिन वे निरंतर अपने पथ पर अग्रसर रहे। साध्वी रम्यप्रभाजी ने काव्य पाठ के माध्यम से गुरु तुलसी के अवदानों के बारे में जानकारी दी। बैंगलोर से समागत अभातेयुप के पूर्व महामंत्री सुभाष सुराणा, सभा के उपाध्यक्ष मांगीलाल तातेड़, मंत्री देवराज चौपड़ा, उपासिका सुमन तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन नरेश तातेड़ ने किया।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का 31 वां विकास महोत्सव साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षा विहार में आयोजित हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- आचार्य श्री तुलसी विकास के श्लाका पुरुष थे। उन्होंने धर्मसंघ में चहुंमुखी विकास किया। प्रत्येक व्यक्ति विकास चाहता है। विकास में पाँच 'वि' का महत्व है- विद्या, विनय, विवेक, विरति और विधायक विचार। विकास का प्राण तत्त्व है- अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था। आचार्य श्री तुलसी के आचार्य पद ग्रहण दिवस को वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ विकास महोत्सव के रूप में मनाता है। विकास महोत्सव की परिकल्पना आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने की थी, जिसकी स्वीकृति स्वयं गुरुदेव तुलसी ने प्रदान की थी। मुनि परमानंदजी ने कहा- विकास के उज्ज्वल नक्षत्र थे आचार्य श्री तुलसी। उन्होंने अपने कर्तृत्व एवं शिष्य समुदाय के समर्पण से धर्मसंघ में महनीय विकास किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता के अध्यक्ष अजय भंसाली, साउथ हावड़ा सभा के मंत्री बसंत पटावरी, तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद, अभातेममं की बंगाल प्रभारी अनुपमा नाहटा, साउथ हावड़ा तेममं की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया, गुवाहाटी से समागत दिलीप दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारंभ वृहत्तर कोलकाता की विभिन्न शाखा मंडलों की बहनों के समूह संगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

डोंबिवली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विकासशील धर्मसंघ है। प्रत्येक आचार्य ने अपनी क्षमतानुसार इस धर्मसंघ को उत्तरोत्तर विकसित किया है, इसकी सुरक्षा के साथ इसका विस्तार किया है। नवमाचार्य श्री तुलसी ने मानो इसका कायाकल्प कर दिया। नाना आयामों के द्वारा केवल तेरापंथ और जैन धर्म का ही नहीं मानव जाति का उत्थान, कल्याण हो इसलिए उन्होंने अनेकों अवदान दिए। अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के द्वारा व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और विश्व का भविष्य बना, उन्हें विस्मृत नहीं किया जा सकता है। गुरुदेव ने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर पदलिप्सित युग को बोध पाठ दिया। भाद्रव सुदी नवमी के दिन जब आचार्य श्री तुलसी का पट्टोत्सव मनाने को संघ तैयार हुआ, उस समय गुरुदेव ने फरमाया कि पट्टोत्सव वर्तमान आचार्य का मनाया जाता है, अतः अब आचार्य महाप्रज्ञ जी का पट्टोत्सव मनाया जाए। उस समय आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने निवेदन किया- गुरुदेव आपने धर्मसंघ का चहुंमुखी विकास किया है, उसकी स्मृति के लिए हम इस दिवस को विकास महोत्सव के रूप में सदा सदा मनाते रहेंगे। कार्यक्रम में मुनि अमनकुमारजी, मुनि नमिकुमारजी, मुनि मुकेशकुमारजी ने भी गीत व वक्तव्य के माध्यम से अपने सारगर्भित विचार प्रकट किए। मुनि कमल कुमारजी ने फरमाया कि कुछ दिनों पूर्व मुनि नमिकुमारजी ने 51 दिनों की तपस्या का पारणा किया था। आज 14 की तपस्या है और आगे का भी विचार है। कार्यक्रम से पूर्व केसर देवी परमार ने 20 एवं जगदीश जैन ने 12 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा कुमुद कच्छारा, सभा अध्यक्ष दलपत जैन, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा कोठारी, अणुव्रत समिति संयोजक अनिल चंडालिया, ज्ञानशाला से पवित्रा आँचलिया, उपासिका उर्मिला बडाला, कन्या मंडल, युवक परिषद् आदि ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

भीलवाड़ा

साध्वी कीर्तिलताजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्म संघ के नवमें आचार्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 31वां विकास महोत्सव उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। साध्वीश्री के नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम का शुभ आगाज हुआ। साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि विकास महोत्सव त्याग की कोख से जन्मा है। आचार्य तुलसी ने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर अपने पद का विसर्जन किया तो आज यह विकास महोत्सव संघ को उपलब्ध हुआ। गणाधिपति तुलसी ने अपने 6 दशक के शासनकाल में नये-नये आयाम दिए, जिसकी वजह से आज यह संघ कोहिनूर की तरह चमककर पूरे विश्व का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। युग आयेंगे और चले जाएँगे पर आचार्य तुलसी के कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व की गूंज सदैव अमर रहेगी। साध्वी शांतिलताजी, साध्वी पूनमप्रभाजी, साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी ने आचार्य तुलसी के नौ दशक की जीवन यात्रा में उनके द्वारा प्रदत्त अवदानों को रोचक अन्ताक्षरी के माध्यम से प्रस्तुत किया। साध्वी शांतिलता ने मंच का कुशल संचालन करते हुए कहा- तुलसी का जीवन नवीनता का परिचय था, उनके जीवन की महिमा को जमाना याद करेगा। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने विकास महोत्सव पर विचार रखते हुए कहा कि गुरुदेव तुलसी के जीवन से हम त्याग व विसर्जन के सूत्र सीखेंगे तो हमारा संघ स्वतः विकास के परचम पर होगा। आपने महासभा की महत्वपूर्ण योजनाओं की जानकारी प्रदान की। बाल कलाकार दक्ष बडोला, सिद्धार्थ दुगड़, जीया चोरडिया ने सुमधुर गीत से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष जसराज चोरडिया ने महासभा अध्यक्ष का स्वागत अभिनंदन करते हुये अपनी भावना प्रकट की। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने तुलसी अभिवंदना में गीतिका प्रस्तुति की।

अहमदाबाद पश्चिम

साध्वी मधुस्मिताजी के सान्निध्य में गुरूदेव तुलसी का पट्टोत्सव विकास महोत्सव के रूप में मनाया गया। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि मेरी शिक्षा, दीक्षा गुरूदेव के कर कमलों से हुई, मुझे उन्होंने ही तराशा। आपने जीवन में दो हाथों से जो काम किए वे काम लाखों हाथ मिलकर भी नहीं कर सकते। आपने समाज में निहित कुरूतियों को खत्म किया, नारी जगत का उद्धार किया, हिंदी, प्राकृत, संस्कृत भाषा का संघ में विकास किया। आपकी विकास गाथा को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। साध्वी प्रदीपप्रभा जी कहा कि गणाधिपति गुरूदेव तुलसी ने संघ को गति, प्रगति देकर नई दिशा दी। आप व्यक्ति निर्माता पुरुष थे, आपने संघ में अनेक लोगों का निर्माण कर उद्धार किया। वरिष्ठ श्रावक बाबूलाल सेखानी, राजेंद्र बोथरा, संतोष सुराणा, सभा अध्यक्ष सुरेश दक, TPF से मिनी कोठारी ने गुरूदेव तुलसी की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सहजयशा जी ने किया।

कांदिवली, मुंबई

तेरापंथ भवन कांदिवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। धर्म सभा को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने विकास की जो कीर्ति गाथा लिखी है उसके पीछे कारण है 'जीवन भर काम करूंगा' का फौलादी चिंतन और गतिशीलता 1 उनकी डिक्शनरी में आलस्य नाम शब्द ही नहीं था। उनके कार्य कौशल से, अवदानों से तेरापंथ जैन धर्म का पर्यायवाची बन गया। साध्वीश्री ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा मुझे लंबे समय तक गुरुदेव श्री तुलसी के श्री चरणों में रहकर शिक्षामृत पान करने का सौभाग्य मिला, प्रेरणा मिली। साध्वी वृंद ने सामूहिक संगीतमय प्रस्तुति दी 1 महिला मंडल, मनोहरलाल मादरेचा, रतन देवी बाफना, राजू देवी वेद, छवि संचेती, नियति सेठिया, अशोक हिरण, मुकेश कुमठ, राकेश सिंघवी आदि ने अपनी प्रस्तुति दी।

फारबिसगंज

तेरापंथ भवन में बिहार-नेपाल-झारखंड स्तरीय विकास महोत्सव का कार्यक्रम साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी भविष्य दृष्टा थे। उन्होंने भविष्य की कल्पना करते हुए अनेकों अवदान इस संघ को दिए हैं। यों तो पूरी आचार्य परंपरा ने विकास के क्रम में नए-नए आयामों को तेरापंथ धर्म से जोड़ा है लेकिन आचार्य श्री तुलसी ने जिन आयामों से तेरापंथ धर्मसंघ को एक नई राह दिखाई वे सचमुच में अकल्पनीय हैं। आचार्य श्री तुलसी के युग में साध्वियों की शिक्षा, अणुव्रत, समण संस्कृति के द्वारा देश एवं विदेशों में तेरापंथ धर्म को बढ़ाने का कार्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगमों का संपादन एवं नवीनीकरण आदि के द्वारा समाज में एक नई जागृति ला दी। साध्वी सुधांशुप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में धर्म और कर्म को जानकर जीवन में विकास करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के दूसरे चरण 'सामूहिक खमत खामणा' में नेपाल बिहार सभा, महासभा के पदाधिकारी एवं अन्य क्षेत्र से आए हुए सभी पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वीश्री से सामूहिक रूप से खमत खामणा किया। तृतीय चरण में नेपाल, बिहार एवं झारखंड से आए हुए मेधावी छात्र एवं तपस्वियों का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद द्वारा तुलसी अष्टकम से की गई। स्थानीय सभा अध्यक्ष महेंद्र बैद ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। नेपाल-बिहार सभा के अध्यक्ष चैनरूप दुगड, महामंत्री वीरेंद्र संचेती, भिक्षु ट्रस्ट के अध्यक्ष राजकरण दफ्तरी, महासभा संवाहक नेमचंद बैद व अनूप बोथरा, बिहार आंचलिक प्रभारी राजेश पटवारी, प्रभारी मनोज पुगलिया व मनोज भंसाली आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। नौ-नौ की संख्या में स्थानीय सभा, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

31वें विकास महोत्सव के विविध कार्यक्रम

मोमासर

साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का 31वां विकास महोत्सव का आयोजन तेरापंथ भवन मोमासर में किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'जपें हम तुलसी-तुलसी नाम' सुमधुर स्वरों के संगान से किया गया। साध्वीश्री ने अपने संयम प्रदाता की वर्धापना में अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य तुलसी विकास के पुरोधा थे। तेरापंथ में भागीरथ बनकर उन्होंने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, आगम अनुसंधान आदि आयामों के रूप में उन्होंने जो विकास की गंगा बहाई उस गंगा में अभिस्नात होकर आज पूरी मानव जाति नई ताजगी, नई रोशनी का अनुभव कर रही है। उनके जीवन में शांति और क्रांति का अद्भुत संगम था। मात्र 22 वर्ष की युवावस्था में आचार्य पद पर आसीन होकर वर्षों तक उन्होंने न केवल प्रशासन की डोर कुशलता पूर्वक थामे रखी अपितु अपनी सफल अनुशासना से अनगिन व्यक्तियों का निर्माण किया। पुष्पा पटावरी, किरण पटावरी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी विधिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में आचार्य तुलसी को क्रांतिकारी आचार्य बताते हुए पांच आचारों का वर्णन करते हुए स्वयं के लिए विकास के मंगल कामना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभाजी किया।

विलेपार्ले

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सानिध्य में कीर्तिमानों के स्रष्टा गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के पट्टोत्सव दिवस को विकास महोत्सव के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा आचार्य श्री तुलसी अध्यात्म जगत के महातेजस्वी सूर्य थे। उनके आभामण्डल से जो रश्मियां निकलती उसका स्पर्श पाकर प्रत्येक व्यक्ति परम शांति की अनुभूति करता। साध्वी संचितयशा जी ने कहा आचार्य श्री तुलसी मानवता की वसुन्धरा पर नैतिक जीवन-मूल्यों की फसल उगाने वाले एक दिव्य दृष्टि संपन्न महामानव थे। रेखा कोठारी, कुसुम कोठारी, भावना डागलिया ने मंगल गीत का संगान किया। गुरुदेव तुलसी के संसारपक्षीय पौत्र सुशील खटेड़, उपासक गंभीरमल डागलिया, तरुण गुंदेचा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष महेन्द्र वडाला, महिला मण्डल अध्यक्षा रेखा कोठारी, मुंबई सभा के पूर्व मंत्री दीपक डागलिया, मुंबई सभा के संगठन मंत्री अनिल बाफना, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका रीना बाफना, महिला मंडल मंत्री अंकिता वडाला एवं कल्पेश वडाला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति गीत एवं भाषण से दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी रक्षितयशा जी ने किया।

बीदासर

समाधि केंद्र बीदासर में 31वें विकास महोत्सव कार्यक्रम में केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी ने कहा कि आचार्य तुलसी विकास पुरूष थे, उन्होंने स्वयं का विकास किया एवं संघ में भी विकास को नए-नए आयाम उद्घाटित किए। आचार्य तुलसी कहते थे कि मेरे पास चार मंत्री हैं - विवेक मेरा शिक्षामंत्री, साहस मेरा रक्षा मंत्री, पुरूषार्थ मेरा अर्थमंत्री एवं आत्मचिंतन मेरा गृहमंत्री। ये चारों जिसके पास होते हैं वही विकास कर सकता है। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी विमलप्रभाजी, साध्वी जयंतयशाजी एवं साध्वी खुशीप्रभाजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने साध्वियों के विकास पर बल दिया एवं नया मोड़ अभियान से महिला समाज को भी कुरूढ़ियों से दूर किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वीवृंद ने सुमधुर गीतिका द्वारा किया। कार्यक्रम का कुशल सचालन साध्वी नम्रताश्रीजी ने किया।

पीतमपुरा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में विकास महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में कहा- विरल विशेषताओं के महापुंज आचार्य श्री तुलसी की गौरव गाथा सागर से भी अधिक गहन एवं हिमालय से भी अधिक ऊंची है। प्रभु तुलसी की जीवन गाथा, भाग्य एवं पुरुषार्थ के महानायक की गाथा है। उनका पुरुषार्थ सफल हुआ, उनके सपने सच हुए, उनके पीछे उनका मुखर कर्तृत्व बोल रहा है।उन्होंने धर्म संघ के हर घटक को अभिसिंचन दिया, संपोषण दिया, वहीं संपूर्ण मानव जाति के विकास और उत्थान के हेतु भी बने। उन्होंने धर्म संघ के हर आयाम को नई दिशा व नई ऊर्जा से संप्रेरित किया। व्यक्तित्व निर्माण की कला में सिद्ध हस्त आचार्य तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी, आचार्य महाश्रमण जी, शासन शमाता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी जैसे अनेकों व्यक्तित्वों का निर्माण किया। उन्होंने धर्म संघ को तेजस्वी, ओजस्वी एवं वर्चस्वी बनाया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा- आचार्य तुलसी का शासन काल विकास की वर्णमाला से गुंफित एक महाशिला अभिलेख है। उन्होंने अपनी जीवन रूपी खेती में विकास के बीज वपन किए जिसके मीठे फल हम आज खा रहे हैं। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा- आचार्य तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन ऐसे समय में किया जब उनके पास सब कुछ था। ऐसे गौरवशाली आचार्य पद का विसर्जन कर उन्होंने मानवता को बोध पाठ दिया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि धर्म संघ के प्रखर महासूर्य आचार्य तुलसी के शासनकाल को विकास का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर स्वरांजलि अर्पित की। सभा के मंत्री वीरेंद्र जैन, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बैंगनी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। राजेश खिमेसरा एवं राकेश जैन ने गीत प्रस्तुत किया।

भायंदर

साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में तुलसी समवसरण तेरापंथ भवन भायंदर में 31वां विकास महोत्सव का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने उपस्थित श्रावक समाज को सम्बोधित करते हुए कहा कि विकास महोत्सव का संबंध विकास पुरूष युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के पद विसर्जन के इतिहास से जुड़ा हुआ है। आचार्य तुलसी का जीवन कीर्तिमानों का कीर्तिमान था। उन्होंने आध्यात्मिक, संघीय और सार्वजनिक तीनों दृष्टियों से तेरापंथ शासन को ऊंचाइयां प्रदान की। मंगलाचरण बहन पुष्पादेवी लोढ़ा ने किया। महिला मंडल द्वारा रोचक नाटिका की प्रस्तुति दी गई। वन्दना सुराणा, उगमराज आच्छा, सभा उपाध्यक्ष विजय बोकडिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी बोधिप्रभा जी ने किया।

लुधियाना

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का कार्यक्रम अपूर्व आनंद के साथ मनाया गया। परमेष्ठी स्तुति के साथ साध्वीश्री ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वीश्री ने कहा- विकास के प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी ने संघ के चहुमुखी विकास के लिए अनेक आयाम उद्घाटित किये जिनसे सम्पूर्ण मानव जाति लाभान्वित हो रही है। विकास के शिखर पुरूष आचार्य श्री तुलसी ने झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक अणुव्रत आंदोलन का शंखनाद किया। देश ही नहीं अपितु विदेश की धरती भी इससे लाभान्वित हुई है। गुरूदेव तलसी के शासनकाल में शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, साहित्य, कला आदि क्षेत्रों में विशष विकास हुआ। उनके चिंतन की व्यापकता ने अंधरूढियों को हटाकर महिला जागृति का बिगुल बजाया। दूसरी ओर सभा, परिषद, ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी आदि के माध्यम से पुरूष वर्ग को भी विकास के पायदान पर चढने की प्रेरणा दी। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान आदि आयामों से तेरापंथ धर्मसंघ को आकाशीय ऊचाईयां दी।

इस अवसर पर आराध्य अभ्यर्यना के साथ साध्वी संवरवभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी ने अपने विचार कविता एवं वक्तव्य के द्वारा अभिव्यक्त किये। उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय प्रभारी सूर्यप्रकाश श्यामसुखा, सभाध्यक्ष धीरज सेठिया ने अपने विचार रखे। महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। संचालन मंत्री तरूण सुराणा ने किया। अणुव्रत जेन विश्व भारती पंजाब प्रभारी मीडिया प्रभारी जयंत सेठिया ने अपने विचार रखे।

शाहदरा

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में 31वां विकास महोत्सव कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री द्वारा तुलसी अष्टकम् के संगान के साथ हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के नवमें आचार्य श्री तुलसी के नाम में ही चमत्कार है। तु- तुम्हारे, ल- लक्ष्य, सी- सिद्ध, अर्थात तुम्हारा लक्ष्य सिद्ध हो। आपकी नाड़ी के हर स्पंदन में विकास के नए मानचित्र अंकित थे। हर रक्त की बूंद में स्वस्थ समाज की परिकल्पना थी। यही कारण कि वे तेरापंथ धर्म संघ के नवाधिशास्ता होते हुए भी 20 वीं सदी के आध्यामिक जगत के शीर्षस्थ महापुरूष कहलाए। अणुव्रत अनुशास्ता की जीवन गाथा एक महामानव की आत्मकथा है। आपने संघ में अनेकानेक अवदान दिए। 11 वर्ष में आप जैन मुनि बने, 22 वर्ष में आचार्य पद पर आसीन, 33 वर्ष में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया, 44 वर्ष में लम्बी यात्राएं की, 55 वर्ष में जैन विश्व भारती प्रारम्भ किया, 66 वर्ष में समण श्रेणी का निर्माण किया, 77 वर्ष में भिक्षु चेतना वर्ष मनाया गया। आप संघ के ऐसे विकास पुरोधा थे जिन्होंने नारी जाति का उत्थान किया।

साध्वी शांतिप्राभाजी, साध्वी कमलविभाजी एवं साध्वी मुदिताश्रीजी ने अपने दीक्षा गुरू के प्रति अभ्यर्थना व्यक्त की। ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, पुर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। शाहदरा सभाध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के साथ कार्यक्रम का संचालन किया।

सरदारशहर

डॉ. साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में विकास महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा - भारतीय परमपरा में क्रांति और शांति का प्रतीक उन्हें माना जाता है जिसमें संवेदना, साहस, विवेक, वेदना, पवित्रता, प्रखरता, चेतना, चेतावनी सघनता से विद्यमान हो। इस कोटि में एक नाम आचार्य श्री तुलसी का है।

विकास कौन कर सकता है? जिसका हौसला बुलन्द हो, तकदीर मेहरबान हो, पुरूषार्थ की लौ मंद ना पड़े एवं जिनकी सोच सकारात्मक हो वो किसी भी फील्ड में सफल हो सकता है। विकास महोत्सव आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दिया गया एक महान् अवदान है। इसमें अतीत का सिंहावलोकन, वर्तमान की समीक्षा एवं भविष्य की योजना बनाने का अवसर है।

साध्वी कान्तयशाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी मंदारयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभा जी ने कविता एवं गीतिका के माध्यम से अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। राजू छाजेड़ ने तुलसी अष्टकम् से मंगलाचरण किया। सभाध्यश राजेश बुच्चा, तेयुप अध्यक्ष लोकेश सेठिया, तेममं की ओर से ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी कान्ता चिण्डालिया, अणुव्रत समिति की ओर से सुमन भंसाली ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री मनीषा बेद ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विविध कार्यक्रम

चेम्बूर, मुंबई

साध्वी राकेशकुमारीजी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। उपासिका विद्या जैन, प्रेक्षा प्रशिक्षक मीना जैन, खुशबु जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वीश्री ने आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन को उजागर करते हुए कहा- वीतराग वाणी के भाष्यकार, सतपथ के खोजी, आत्मगवेशी आचार्य भिक्षु आत्मार्थी महापुरुष थे। लोहपुरुष आचार्य भिक्षु प्रतिकूल परिस्थितियों, संघर्षों, विघ्न बाधाओं से घबराये नहीं बल्कि अबाध गति से अध्यात्म के समरांगण में गतिशील बने रहे और वीर प्रभु की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने में रत रहे। साध्वीश्री ने आगे कहा- आचार्य भिक्षु व उत्तरवर्ती आचार्यों की स्वस्थ परम्परा की बदौलत आज तेरापंथ धर्मसंघ लाखों-लाखों का आश्रय स्थान व पावन तीर्थधाम बना हुआ है। साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी, साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने मुक्तक व विचारों द्वारा अपने श्रद्धा स्वर प्रस्तुत किए। नरेन्द्र तातेड़ ने सुन्दर गीत की प्रस्तुति दी। अध्यक्ष रमेश धोका ने विचार व्यक्त किये।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेशकुमारजी ठाणा-3 के सान्निध्य में 222वां आचार्य श्री भिक्षु चरमोत्सव प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- आचार्य भिक्षु भारतीय संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। उनका पूरा जीवन काल संघर्षमय था, वे संघर्षो में जिए लेकिन घबराए नहीं और अपने लक्ष्य की ओर गति करते गए। उन्होंने संयमकाल में भव्य जीवों को तारा और लोगों को सुपथ पर चलने की प्रेरणा दी। उनकी धर्म क्रांति ही तेरापंथ की आधार शिला बनी। भगवान महावीर के प्रति उनकी अनन्य भक्ति थी। उन्होंने शरीर की नश्वरता को समझ कर सिरियारी में अनशन स्वीकार किया। भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी के दिन सात प्रहर के अनशन में सिरियारी में समाधिमरण को प्राप्त हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ 'ॐ भिक्षु' के जप से हुआ। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा- आचार्य श्री भिक्षु साधना के सजग प्रहरी थे। उनका आचार पवित्र एवं चरित्र उज्ज्वल था। वे सहिष्णुता के शिखर थे। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु स्तुति गीत का संगान किया। सभा मंत्री बसंत पटावरी ने विचार व्यक्त किये। 'ॐ भिक्षु' का 24 घंटे जप भी किया गया।

उदयपुर

डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में 222वें भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम का समायोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु समयज्ञ, तत्वज्ञ, जैन आगमों के विशेषज्ञ थे। नॉलेज के लिए वे कॉलेज में नहीं गए पर 38 हजार साहित्य का सृजन करके कीर्तिमान बना दिया। 'आत्मां रा कारज सारस्यां - मर पूरा देस्यां' इस आश्वास विश्वास के साथ वे आतापना लेते। 5 वर्ष तक आहार-पानी, स्थान पूरा नहीं मिला फिर भी भिक्षु स्वामी पॉजिटिव और कॉन्फिडेंट रहे। भिक्षु स्वामी ने जीवन के संध्याकाल में उच्चकोटि की आराधना की। उन्होंने संथारा ग्रहण किया, सबसे खमत-खामणा किया। अतीन्द्रिय ज्ञान प्राप्त किया। संतों को शिक्षाएं प्रदान की- परस्पर हेत रखना, किसी में अवगुण मत देखना। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने भावपूर्ण वक्तव्य से स्वामी जी के प्रति विनयांजलि अर्पित की। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने स्वामी जी की औत्पत्तिकी बुद्धि, साध्य, स्वाभिमान के बारे में बताते हुए उनके प्रति भावों की श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, निर्मल जैन, मनोज लोढा, विनोद कच्छारा, सुमन डागलिया, कन्हैयालाल चौरड़िया, कांता खीमावत, तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा आदि ने आराध्य के प्रति भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया।

विले पार्ले

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा - आचार्य भिक्षु सत्य के उपासक थे। उनका एकमात्र लक्ष्य था- सत्यं शिवं सुंदरं की उपासना करना। सत्य देवता से साक्षात्कार करने के लिए उन्होंने पद-प्रतिष्ठा, सुख-सुविधाओं को तिलांजलि की देकर अध्यात्म का प्रकाश दिया। साध्वी संचितयशा जी ने कहा - आचार्य भिक्षु उन्नीसवीं सदी के तेजस्वी व वर्चस्वी संत थे। उन्होंने अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा, गहरी सोच और कर्मठता से जनमानस को नई दृष्टि और नई दिशा दी। साध्वी जागृतप्रभा जी ने कविता की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत सुशीला वडाला व सुमित्रा वड़ाला के मंगल गीत से हुई। वरिष्ठ श्रावक चांदमल दूगड़, अंधेरी तेयुप अध्यक्ष गिरीश सिंघवी, उपासिका रमिला गन्ना, विलेपार्ले महिला मंडल अध्यक्षा रेखा कोठारी, मंत्री अंकिता वडाला, कुसुम कोठारी, सुनील वडाला ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी रक्षित यशा जी ने किया।

अमराईवाड़ी

आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव के अवसर पर साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में सिंघवी भवन, अमराईवाडी में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - आचार्य भिक्षु का जीवन कष्टों की प्रेरक कहानी है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आगमवाणी ही उनका आधार था। शुद्ध साधुत्व की अनुपालना के लिए उन्होंने अपने गुरू से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। 77 वर्षों के अपने जीवनकाल में अनगिनत कष्टों को सहनकर सूर्य की भांति चमकते रहे और सिरियारी में अनशनपूर्वक समाधिमरण का वरण किया। साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी सुरभिप्रभा जी, साध्वी राहतप्रभाजी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया। उपासिका मंजु गेलडा, संस्कारक दिनेश टुकलिया ने विचार रखे।

कांदिवली, मुंबई

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम कांदिवली तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री ने अपने अभ्यर्थना स्वर प्रस्तुत करते हुए कहा- आज का दिन तेरापंथ के प्रथम महासूर्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्ति का दिन है। आचार्य भिक्षु ने सक्षम नैया खेवण हार के रूप में अपना दायित्व पूर्ण किया। उनका व्यक्तित्व सहस्रधिक गुण सम्पन्न था। आवश्यकता है उन गुणों सें कुछ गुणों का प्रवेश आज के पारिवारिक, सामाजिक जीवन में हो तो सौहार्द, सामञ्जस्य का विस्तार हो पायेगा, स्नेहभाव और सम्मान भाव के बिना सामञ्जस्य नहीं रह सकता। आचार्य भिक्षु के संदेश संघ को मजबूत बनाने वाले थे। आचार्य भिक्षु ने शक्तिशाली जीवन जिया, उनका यशः शरीर शताब्दियों तक प्रतिबोध देता रहेगा। जरुरत है हम भिक्षु सिद्धांत कों जानें, समझें और भैक्षवगण की आन, बान, शान की रक्षा करते रहें। कार्यक्रम का प्रारंभ कमल पटावरी के मंगल संगान से हुआ। तेरापंथ सभा कांदिवली के मंत्री रतन सिंघवी और तेरापंथ संभा मलाड मंत्री सुरेश धोका ने अभ्यर्थना स्वर प्रस्तुत किए। साध्वी सुदर्शन प्रभाजी, साध्वी अतुल यशा जी, साध्वी राजुल प्रभा जी, साध्वी चैतन्य प्रभा जी और साध्वी शौर्य प्रभाजी नें साध्वी डॉ मंगल प्रज्ञा जी द्वारा रचित 'जपल्यो भिक्षु नाम' गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर संस्कारक, तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली के निवर्तमान मंत्री सौरभ दुधोड़िया ने 15 तप का प्रत्याख्यान किया। बहन खुशबू ने भाई को वर्धापित किया। साध्वी वृन्द ने तप अनुमोदना संगान किया। तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल और युवक परिषद द्वारा तपस्वी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शन प्रभा जी ने किया।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में 222 वां भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन शांति निकेतन सेवा केंद्र के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर साध्वी चरितार्थ प्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु को नई स्थिति में सर्वप्रथम बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। आचार्य भिक्षु ने जो विचार प्रस्तुत किए वे नए थे, इसलिए उनका भयंकर विरोध होने लगा। आचार्य भिक्षु ने इस स्थिति को देखते हुए अपने जीवन की दिशा में आत्म कल्याण को प्राथमिकता देते हुए एकांतर तप और वन में आतापना लेना शुरू कर दिया एवं सारा समय ध्यान-साधना में लगा दिया। यह क्रम वर्षों तक चला फिर एक दिन मुनि थिरपालजी और मुनि फतेहचंदजी ने आचार्य भिक्षु से प्रार्थना की " गुरुदेव तपस्या का वरदान हमें दे और आप जनता को प्रतिबोध दे"। यह तेरापंथ के विकास का प्रथम स्वर था। आचार्य भिक्षु ने उनकी प्रार्थना को सुना और फिर एक बार जनता को प्रतिबोध देना शुरू किया। यह प्रयत्न बहुत सफल हुआ और लोगों ने आचार्य भिक्षु को सुना-समझा और उनके अनुयायी बनने लगे। आचार्य भिक्षु महान तपस्वी थे, उनकी तपस्या का वलय इतना शक्तिशाली था कि उसके परमाणु हजारों वर्षों तक अपना प्रभाव सुरक्षित रख पाएंगे। आचार्य भी भिक्षु द्वारा जो सत्य अभिव्यक्त हुआ, वह इतना चिरंतन था कि उसे वर्तमान की धारा का स्रोत कहा जा सकता है। आज के ही दिन 222 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु की आत्मा अनंत में विलीन हो गई। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने आगमों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने भगवान महावीर की वाणी को सहज सरल शब्दों में जनता के सामने रखा। उन्होंने यथास्थिति से ऊपर उठकर सत्य की गणेषणा की, जीवन में सत्य की अवधारणा के लिए उन्होंने अपने सुख और सुविधाओं का बलिदान कर दिया। उन्होंने धर्म संघ की चिरंजीविता के लिए अनेक मर्यादाओं का निर्माण किया। इस अवसर पर साध्वी रुचिप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा से जैन लूणकरण छाजेड़, तेरापंथ युवक परिषद से ललित राखेचा एवं तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुप्रिया राखेचा किया।

लुधियाना

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में 222 वां भिक्षु चरमोत्सव का भव्य समायोजन अखंड जप-तप के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभाजी व साध्वी हेमप्रभा के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने परिषद को सम्बोधित करते हुए कहा- तेरापंथ धर्मसंघ का विलक्षण संत, एक अलबेला संत, जन-जन की आस्था का धाम आचार्य पद की गरिमा से गौरवान्वित संत आचार्य भिक्षु का नाम बड़ा ही चमत्कारिक है। जिनके जाप से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। सारी विघ्न बाधाएं स्वतः शांत हो जाती है। उनकी साधना व तपस्या का तेज अद्धितीय था। वे सत्य के पुजारी थे। सत्य का जीवन जीया, सत्य ही उनकी अंतिम मंजिल बनी। आज के दिन आचार्य भिक्षु ने सिरियारी में अंतिम सांस ली।

साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने आचार्य भिक्षु के अनुपम व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर अपने उद्गार व्यक्त किए। महिला मंडल की सुमधुर स्वर लहरी के साथ जया बुच्चा ने अपने विचार रखे। सरोज कोचर, गरिमा पटवा, प्रमिला पुगलिया ने कविता व वक्तव्य के माध्यम से अपने विचार रखे। मधुर स्वर सरगम के साथ संयम बरडिया ने गीत की प्रस्तुति दी। कुशल संचालन साध्वी हेमंतप्रभाजी ने किया। रात्रि में आयोजित धम्मजागरण में मुंबई से समागत मधुर गायिका मीनाक्षी भूतोड़िया ने सुमधुर स्वरों से पूरी परिषद को भाव-विभोर कर दिया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विविध कार्यक्रम

पीतमपुरा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव का भक्तिमय कार्यक्रम खिलौनी देवी धर्मशाला में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा- सत्य संधित्सु आचार्य भिक्षु संयम, तप और त्याग के जीवंत प्रतीक थे। उनके जीवन में संघर्षों के विकत भूचाल आए पर वह लौहपुरुष विकट परिस्थितियों से घबराए नहीं, रूके नहीं, झुके नहीं, साहस का दीप जलाकर हमेशा आगे बढ़ते रहे। कष्टों की भीषण आग में तपकर उनका जीवन कुंदन बनकर निखरा। आचार्य भिक्षु की सहनशीलता हमारे भीतर भी अवतरित हो। सहनशील बनकर हम अपने जीवन की हर कठिनाई का पार पा सकते हैं।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु सिद्ध प्ररूष थे। उन्होंने सिद्धि योग में जन्म लिया एवं सिद्धि योग में ही महाप्रयाण कर दिया। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा अनिदानता, दृष्टिसंपन्नता एवं योगवाहिता गुण से संपन्न आचार्य भिक्षु इस चातुर्गतिक संसार का अतिशीघ्र अंत करेगें, ऐसा हमारे साहित्य में आता है। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा आचार्य भिक्षु का सपना था - शुद्ध साध्वाचार का पालन, उनकी मंजिल थी - वीतरागता। मंजिल को पाने के लिए प्रखर पुरुषार्थ किया और अंतिम श्वास तक पुरुषार्थ करते रहे। साध्वी समत्वयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। सभा के मंत्री विरेन्द्र जैन ने मंगल संगान किया। रात्रि में धम्म जागरणा का सुंदर कार्यक्रम आयोजित हुआ। सुमधुर संगायक विमल बेंगानी आदि ने अपने मधुर स्वरों से कार्यक्रम में समां बांधा।

शाहदरा

साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में 222वां भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वीश्री द्वारा भिक्षु अष्टकम् से किया गया। साध्वीश्री ने कहा - तेरापथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे। आचार्य भिक्षु शौर्य, वीर्य, निर्भीकता के धनी थे। उन्होंने सत्य और साधना का जीवन जी कर धर्म का तेजस्वी रूप उजागर किया। धर्म के मर्म को जनता के सामने रखा। भिक्षु का जीवन तेरापंथ की प्रयोगशाला था। तेरापंथ जिन ऊंचाइयों को छू रहा है, उनमें स्वामी जी का त्याग तपोमय जीवन बोल रहा है। आचार्य भिक्षु विरल व विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी व साध्वी मुदिताश्रीजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन के बारे में अपने उद्गार व्यक्त किए। ओसवाल सभा अध्यक्ष आनंद बुच्चा, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबुलाल दुगड़, गाजियाबाद सभा मंत्री रमेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी, तेजकरण बैद, युवक परिषद अध्यक्ष राकेश बेंगानी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मंडल ने सूमधुर गीत प्रस्तुत किया। गायक संजय भटेवरा ने गीत के द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी ने किया। धम्म जागरण कार्यक्रम में गायक संजय भटेवरा, मनोज नाहटा, जयसिंह दूगड़, हनुमान नाहटा, अनुराग बोथरा, प्रियंका दुगड़ आदि अनेकों गायकों ने सुमधुर प्रस्तुति दी। मंच संचालन नीतू सुराणा ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

अध्यात्म की साधना में...

पिछले कई वर्षों से प्रेक्षा इंटर नेशनल संस्था उभरी, इसके माध्यम से विदेशियों के भी शिविर लगने लगे। प्रेक्षा वाहिनी भी कार्यरत है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में भी अणुव्रत की तरह जैन-अजैन कोई भी जुड़ सकता है। इसका विस्तार देश-विदेश में हुआ है, अनेक कार्यकर्ता इससे जुड़े हुए हैं। वर्तमान टेक्नोलॉजी ने भी सुविधा भी प्रदान कर दी है। आज नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामबरन यादव भी इस कार्यक्रम में पहुंचे हैं।

अनेक प्रशिक्षक भी इससे जुड़े हैं। एस. के. जैन ने कितने ध्यान के शिविर लगाए थे, और भी विशिष्ट व्यक्ति इससे जुड़े हैं। समण श्रेणी का भी योगदान रहा है। इसकी स्थापना का पचासवां शुरू हो रहा है। सभी चारित्रात्माएं, समणियां व श्रावक समाज इसके प्रचार-प्रसार, प्रयोग करने का प्रयास करें। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार व मित भाषण ये पांच बातें जो प्रेक्षाध्यान से जुड़ी हैं वे हमारी जीवन शैली से जुड़ जाए। प्रेक्षाध्यान वर्ष अच्छे ढंग से चले, अच्छा कार्य हो, मंगल कामना। पूज्यवर ने उपस्थित जनता को ध्यान का प्रयोग करवाया, प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों को उपसंपदा स्वीकार करवाई।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि जब हमारे पास सूर्य, चंद्रमा या शब्दों की ज्योति नहीं है तो हम भीतर की ज्योति से देख सकते हैं। भीतर की ज्योति प्रकट करने का एक उपाय है - ध्यान। ध्यान के समान और कोई दूसरा तीर्थ, तप या योग नहीं है। हम ध्यान को जीवन में स्थान दें। ध्यान के द्वारा व्यक्ति अंतर्मुखी बन सकता है। ध्यान चेतन मन की शक्तियों को सुला देता है और अवचेतन मन की शक्तियों को जगा देता है। ध्यान के द्वारा चेतना का रास्ता बदल जाता है। चेतना बाह्य पदार्थों से हटकर भीतर की ओर चली जाती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. रामबरन यादव ने कहा कि इस प्रेक्षाध्यान शिविर में आकर कुछ ज्ञान प्राप्त किया है। वर्तमान विश्व की स्थिति में हमें महापुरुषों की अपेक्षा होती है। हम भगवान महावीर की वाणी से विश्व की समस्याओं का उपचार ढूंढने का प्रयास करें। मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी का बार-बार स्वागत करने का अवसर मिला है। में उनके विचारों से प्रभावित हूं। ऐसी विभूति ही हमें सच्ची राह दिखा सकते हैं। प्रेक्षा इण्टरनेशनल के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमारश्रमणजी ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के शुभारम्भ के संदर्भ में आचार्यश्री द्वारा प्रदान किए आशीर्वचनों का वाचन किया। साध्वी वृन्द ने प्रेक्षाध्यान गीत का सुमधुर संगान किया। सूरत चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, अध्यात्म साधना केन्द्र के डायरेक्टर के. सी. जैन, प्रेक्षा इण्टरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद संचेती, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

गृहस्थ जीवन की...

गृहस्थ काम और अर्थ का संयम करे। बारह व्रतों को स्वीकार करे, परिग्रह कम करने का प्रयास रहे। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि दुनिया में अच्छाई और बुराई दोनों का अस्तित्व है, पर देखा जाता है कि व्यक्ति का झुकाव बुराई की तरफ ज्यादा होता है। व्यक्ति को दूध बेचने के लिए घूमना पड़ता है, पर मदिरा तो अपनी दुकान पर ही बिकती है। व्यक्ति में सघन मूर्च्छा होती है जो व्यक्ति को बुराई की ओर धकेलती है।

साध्वीवर्या श्री ने सम्यक्त्व के पांच लक्षणों में से एक संवेग को विस्तार से समझाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

बोलती किताब

विजयी बनो

मनुष्य गति - जो मनुष्य बनकर न तो पतन की ओर जाता है और न विकास की ओर जाता है यानी जो मूल पूंजी को सुरक्षित रख लेता है, वह पुनः मनुष्यगति को प्राप्त करता है। जो मनुष्य बनकर न ज्यादा लोभ करता है, न माया छलना करता है, जो सरल होता है, भद्र होता है, ज्ञानार्जन करने में अपने पुरुषार्थ का नियोजन करता है, वह ऊर्ध्वगति को प्राप्त करता है।

मनुष्य वृत्ति - मनुष्यों में विभिन्न वृत्तियां होती हैं - सात्त्विक वृत्तिवाले पुरुष मिलते हैं तो राजसिक और तामसिक वृत्तिवाले व्यक्ति भी मिल सकते हैं। सज्जन व्यक्ति मिलते हैं तो दुर्जन भी मिल सकते हैं। अपेक्षा इस बात की है कि दुर्जन लोगों को उपदेश देकर, समझाकर, कोई प्रयोग आदि करवाकर सज्जन बनाने का प्रयास करना चाहिए।

तामस कोटि का कर्ता - जो व्यक्ति काम तो करता है पर नियमानुसार काम नहीं करता, जिम काम को जैसे करना चाहिए, उस विधि से काम नहीं करता यानी शास्त्र- नियमानुसार काम नहीं करनेवाला व्यक्ति कर्ता तो है, परन्तु वह तामस कोटि का कर्ता होता है। जो कार्य के साथ अहंकार रखता है कि मैंने अमुक काम किया, वह भी तामसिक वृत्तिवाला कर्ता होता है। जो धूर्त आचरण करता है, असत्य बोलता है, आलस्य ज्यादा और काम कम करता है, वह भी तामस कोटि का कर्ता होता है। विद्यार्थी को इस बात का विशेष ध्यान देना चाहिए।

मनुष्य ज्ञान - जिस ज्ञान से एकात्मकता का अनुभव नहीं होता - जिस ज्ञान के साथ राग-द्वेष का भाव जुड़ जाता है, अच्छे के प्रति राग और बुरे के प्रति द्वेष होता है, जिसमें यथार्थ ज्ञान का अभाव होता है, पूर्ण शुद्धता में कुछ कमी होती है, वह राजस ज्ञान होता है। शुद्ध ज्ञान का मतलब है केवल वस्तु को जानना। उसमें राग-द्वेष नहीं करना, यथार्थ बोध करना, यह सात्त्विक ज्ञान की कोटि में आनेवाला ज्ञान है। आदमी यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करे। अगर आदमी मिथ्या ज्ञान और मिथ्या श्रद्धा में चला जाता है तो जैनदर्शन के अनुसार उसमें मिथ्यादर्शन आ जाता है और वह मिथ्यात्व का भागी बन जाता है

जीवन में स्वर्ग का अनुभव - स्वर्ग और नरक तो स्वयं के आचरणों से मिलनेवाली चीजें हैं। आचरण अच्छा है तो स्वर्ग मिल सकता है और आचरण खराब है तो नरक भी मिल सकता है। स्वर्ग और नरक की स्थितियां हमारे वर्तमान जीवन में भी आ सकती हैं। जीवन में शांति है, जीवन अच्छा है तो यहां भी स्वर्ग की अनुभव किया जा सकता है, जीवन में दुःख है तो यहां भी नरक का कुछ अनुभव किया जा सकता है।

धर्म की आराधना - कई गृहस्थ इतने उच्च साधक होते हैं इतने धर्मपरायण होते हैं कि संसार की मोह-माया से हटकर स्वाध्याय, ध्यान आदि में लगे रहते हैं। वे घंटों-घंटों साधना करते हैं। मृत्यु के समय पैसा साथ में चलनेवाला नहीं है, मकान साथ में चलनेवाला नहीं है, नाम, ख्याति साथ में चलनेवाली नहीं है। साथ में धर्म चलता है, कर्म चलते हैं, इसलिए आदमी धर्म की साधना आराधना करे ताकि मोह रूपी पीपल का वृक्ष कट जाए और आदमी अव्ययी स्थान प्राप्त कर सके।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 16 का शेष

अध्यात्म साधना के...

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मनुष्य स्वप्न देखता है ओर उसे पूरा करने का प्रयास भी करता है। फिर भी उसका सपना अधूरा रह जाता है, उसके कई कारण हो सकते हैं। उत्तम संकल्प करने वाले अपना कार्य पूरा कर सफलता प्राप्त कर लेते हैं। फिर चाहे उन्हें कितने ही अवरोधों का सामना करना पड़े। पूज्य आचार्यवर भी उत्तम संकल्प के धनी हैं। किशोर मंडल ने चौबीसी के गीत की प्रस्तुति दी। सूरत के विधायक संदीप देसाई ने पूज्यवर के दर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। नेपाल के गान्धीवादी चिन्तक चन्द्रकिशोर झा, अशोक कुमार बैद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। बारडोली की ललिता गणेशलाला कुमठ ने 41 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

कामनाओं का होना है दुःख का कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
26 सितम्बर, 2024

पुरूषार्थ के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि आदमी कामासक्त होता है, कामनाओं से ग्रस्त होता है, ऐसा आदमी वैर को बढ़ा लेता है। अपने आपको दुःखी बनाना, पाप कर्मों का बंधन करना भी स्वयं के प्रति वैर बढ़ा लेने की बात होती है। कामनाओं की पूर्ति होते ही आगे की कामना हो जाती है। यदि कामनाओं की पूर्ति नहीं होती तो आदमी के मन में आक्रोश भाव भी आ सकता है। किसी आदमी में सत्ता प्राप्ति की कामना, किसी को धन प्राप्ति की कामना, किसी को यश-ख्याति की कामना आदि-आदि अनेक प्रकार की कामनाएं पनपती रहती हैं। कामनाओं का होना ही दुःख का कारण होता है।

दुःख को कम करने के लिए आदमी कामनाओं को कम करे। पुरूषार्थ करे और सफलता नहीं मिले तो दुःखी भी नहीं होना चाहिये। पुरूषार्थ का फल मिलेगा ही यह अपने हाथ की बात नहीं है। अर्हत उपदेश - मार्गदर्शन दे सकते हैं, पर किसी को धर्म में जोड़ ही देंगे कहना कठिन है। पुरूषार्थ और निष्पत्ति में क्या तालमेल है, वह भी देखना होता है। थोड़े लाभ के लिए ज्यादा पुरूषार्थ नहीं करना चाहिये। जो कामना ग्रस्त है, वह अपना वैर बढ़ा लेता है। कामनाओं का अल्पीकरण करे और अच्छी आध्यात्मिक कामनाएं करें।

गृहस्थों के लिए कामनाएं अपेक्षित होती हैं पर कामनाओं का साध्य शुद्ध हो तो साधन भी शुद्ध हो। जहां अहिंसा और संयम है, वो साधन अपनी सीमा में शुद्ध साधन हो सकता है। भौतिक साध्य में भी अहिंसा और संयम पर ध्यान दिया जाये तो साधन शुद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। आदमी भौतिक कामनाओं को कम करने, क्षीण करने का प्रयास करे।

बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि उदितकुमारजी ने तेरापंथ दर्शन और तत्त्वज्ञान के संदर्भ में साध्य और साधन विषय पर में प्रस्तुति दी।

जैन विश्व भारती के वार्षिक अधिवेशन के सन्दर्भ में अध्यक्ष अमरचन्द लूंकड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए पिछले कार्यकाल में किये गये कार्यों की जानकारी दी। संस्था के मंत्री सलिल लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मंत्री प्रतिवेदन व कामधेनू को पूज्यवर को समर्पित किया। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान कराते हुए फरमाया कि जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ से संबद्ध अनेक संस्थाएं हैं, उनमें से एक संस्था है - जैन विश्व भारती। इस संस्था का जन्म आचार्यश्री तुलसी के समय हुआ था। यह संस्था अपनी शताब्दी के उत्तरार्ध में चल रही है। संस्था ने विकास किया है और विकास की ओर भी बढ़ रही है। जैन विश्व भारती तपोवन - आश्रम का सा रूप है। वहां योगक्षेम वर्ष का आयोजन हुआ था।

आचार्यश्री तुलसी ने जैन विश्व भारती को कामधेनु कहा था। शिक्षा, शोध, साधना, साहित्य आदि गतिविधियां खूब आगे बढ़ती रहें। इस संस्थान का होना तेरापंथ समाज के लिए तो मानो भाग्य की बात है। कार्यकर्ताओं का श्रम और शक्ति लग रही है। भाग्य की चिन्ता न करते हुए पुरूषार्थ अच्छा करते रहें। हमारा भी योगक्षेम वर्ष के सन्दर्भ में साधिक एक वर्ष तक वहां प्रवास निर्धारित है।

साध्वी स्तुतिप्रभाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। सूरत के लगभग 28 स्कूल के विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। पूज्यवर ने विद्यार्थियों को संस्कार युक्त शिक्षा प्रणाली की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

बंधन से मुक्त कराने वाला वीर होता है प्रशंसनीय : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
24 सितम्बर, 2024

सत्पथ दिखाने वाले तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि जो अच्छा कार्य करता है, वह प्रशंसा का पात्र बन जाता है। आयारो आगम में कहा गया है कि वह वीर प्रशंसनीय होता है, जो बन्धे हुए व्यक्तियों को मुक्त करता है।

दीक्षा लेना भी वीरता का कार्य होता है। चार चीजें दुर्लभ हैं- मनुष्य जन्म, धर्म का श्रवण, धर्म पर श्रद्धा और संयम में वीर्य करना। जो व्यक्ति संयम के वीर्य से युक्त होता है, संयमवीर होता है, वह व्यक्ति प्रशंसित होता है। साधना का पथ भी एक संग्राम है। इसमें भी संघर्ष होता है। मोहनीय कर्म का औदयिक भाव और मोहनीय कर्म का क्षायोपशमिक भाव इन दोनों में युद्ध होता है। यह भाव जगत में होने वाला युद्ध है। कभी वह उदय रूप में बाहर भी आ जाता है।

अपने आप से युद्ध करो, बाह्य जगत से तुम्हें क्या काम। जो अपने से अपने को जीत लेता है, वह सुख को प्राप्त हो जाता है। जो व्यक्ति काम भोग, राग-द्वेष, आसक्ति आदि के बंधन से अपनी आत्मा को मुक्त कर दूसरों की आत्मा को पापों से मुक्त कराता है, स्वयं तरते हुए दूसरों को तारने वाला होता है, वह वीर प्रशंसनीय होता है। सिद्ध तो स्वयं मुक्त हैं, उनके तो नाम स्मरण से ही कल्याण हो सकता है। आचार्य, उपाध्याय, साधु ये भी दूसरों को बंधन से मुक्त करने वाले हो सकते हैं। मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने भी अनेक बालकों - युवकों को गार्हस्थ्य से मुक्त कराया था।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु

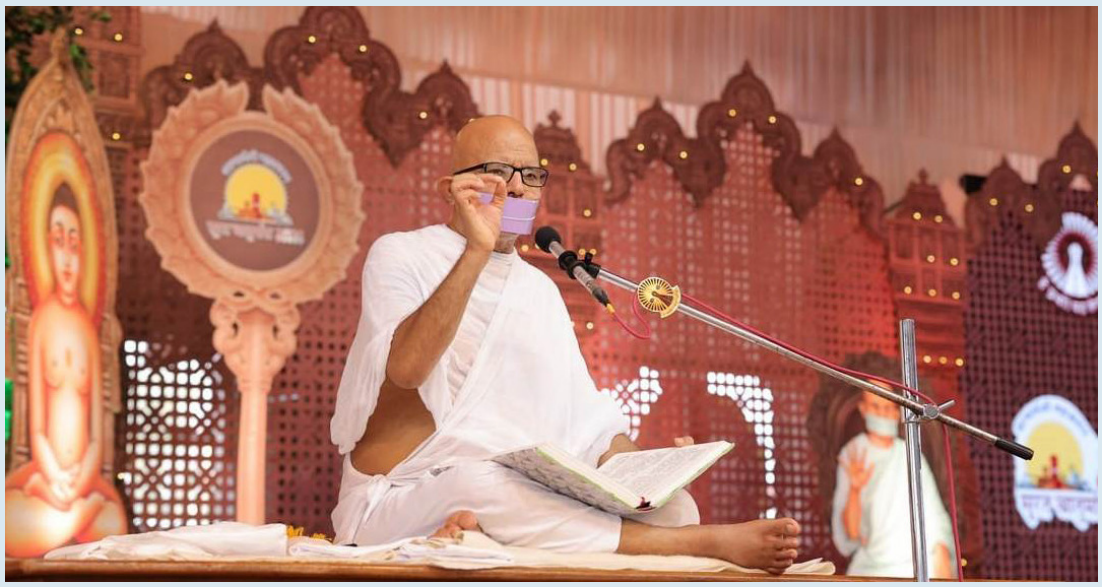

ने सच्चे साधु के लक्षण बता दिये थे। लक्षणों से व्यक्ति की पहचान हो सकती है। सम्यकत्वी के पांच लक्षण बताये गये हैं- शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य। इन पांच लक्षणों से व्यवहार के धरातल पर सम्यकत्वी की पहचान की जा सकती है, निश्चय में तो केवली जानें। जब तक अनन्तानुबंधी कषायों का उदय रहता है, सम्यकत्व नहीं आ सकता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मानव हितकारी संघ के अध्यक्ष मोहनलाल गादिया के अपनी भावना अभिव्यक्त की। संघ की छात्राओं ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
07 अक्टूबर-13 अक्टूबर, 2024

अध्यात्म साधना के लिए छोड़ें परिग्रह की चेतना : आचार्य श्री महाश्रमण

एकादशम् अनुशास्ता में खोला दिल्ली के लिए दिल। 2027 में दिल्ली चातुर्मास की करवाई घोषणा

सूरत।
29 सितम्बर, 2024

देश की राजधानी दिल्ली का एक वृहद् संघ चातुर्मास की अर्ज लेकर पूज्य चरणों में पहुंचा। आये दिल्ली के संघ पूज्यवर की सन्निधि में पंहुचा है। दिल्ली विधानसभा स्पीकर रामनिवास गोयल ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी एवं दिल्ली में चातुर्मास हेतु अर्ज की। राज्य सभा सदस्य लहरसिंह सिरोहिया, पंजाब केसरी की चेयर पर्सन किरण चौपड़ा, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने भी पूज्यवर से दिल्ली चातुर्मास की प्रार्थना की। महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। विजयसिंह कोठारी ने अपनी कृति पूज्यवर को समर्पित की।

पूज्यवर ने अनन्त कृपा कराते हुए दिल्ली वासियों के लिए फरमाया - दिल्ली का समुदाय उपस्थित है। चतुर्मास की बात रखी गई है। भगवान महावीर, आचार्यश्री भिक्षु, गुरूदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को नमन कर, स्मरण कर, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता रही तो सन् 2027 का चतुर्मास दिल्ली में करने का भाव है। दिल्ली वासियों ने पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

महावीर समवसरण में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अनेक संज्ञाएं-वृत्तियां होती हैं। दुर्वृत्तियां भी होती है और सद्वृत्तियां भी होती है। गुस्सा, छलना, माया, लोभ आदि दुर्वृत्तियां है तो दूसरी ओर शांति-सहिष्णुता, निरहंकारता, सरलता, संतोष आदि सद्वृत्तियां होती है।

प्राणी में कभी दुर्वृत्तियां उभार में हो जाती है तो कई बार सद्वृत्तियां प्राधान्य के साथ रह सकती हैं। जब आदमी वीतराग बन जाता है, तब दुर्वृत्तियां पूर्णतया समाप्त हो जाती हैं। कषाय मुक्त चेतना हो जाती है। साधु में भी कभी-कभी कषाय जागृत हो जाता है। आदमी में ममत्व का भाव, परिग्रह की चेतना भी होती है। परिग्रह की चेतना अनेक दुर्वृत्तियों को पैदा कर सकती है। पदार्थ को छोड़ना भी एक तरह से त्याग हो सकता है पर भीतर से जब तक ममत्व का भाव नहीं छूटता है तो वह अपरिग्रह की चेतना नहीं होती।

मूर्च्छा, ममत्व है, वह परिग्रह है। पदार्थ बाह्य परिग्रह हैं तो मूर्च्छा भीतरी परिग्रह है। परिग्रह की चेतना आदमी को अपराध में ले जा सकती है। बाहर के निमित्त भी मिल सकते हैं पर मूल उपादान कारण है, निमित्त कारण सहायक हो सकता है। ममत्व के अनेक स्तर हो सकते हैं। एक ममत्व सात्विक स्तर का हो सकता है, तो कोई ममत्व असात्विक स्तर का हो सकता है। संप्रदाय गौण है, धर्म प्रमुख है। वैसे ही राष्ट्र प्रमुख है, पार्टियां गौण है। अध्यात्म साधना में तो 'मेरा' भाव भी ताज्य है। नमस्कार महामंत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र जैन एकता के रूप में मान्य है। भगवान महावीर 2500वीं निर्वाण शताब्दी पर एक सूत्र, एक ध्वज व एक प्रतीक एकता के रूप में सामने आया था।

हमें अध्यात्म की साधना में जाने के लिए परिग्रह की चेतना को छोड़ना होगा। साधु की अपरिग्रह की बुद्धि रहे। गृहस्थ भी पदार्थ की सीमा करे, उपभोग में संयम रखे। मोह-ममत्व दुःख का कारण बन सकता है। अर्थार्जन में भी ईमानदारी रहे। आदमी जैन हो या अजैन, पर गुडमैन बने। कल से प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष भी प्रारम्भ होने वाला है। प्रेक्षाध्यान से आदमी के कषाय प्रतनूं हो सकते है।

बारह व्रत श्रावकों की जीवन शैली से जुड़े तत्व हैं, जीवन में अहिंसा, संयम और त्याग रहे। गृहस्थों की जीवन शैली प्रशस्त हो। छोटे-छोटे त्याग का क्रम जीवन में रहे। घर में रहते हुए भी साधु जैसा जीवन हो जाये। आत्मा परिग्रह से हल्की बने। आदमी धार्मिक-आध्यात्मिक भावों में ज्यादा से ज्यादा रहने का प्रयास करे। ये शास्त्रों की वाणियां जीवन में परिवर्तन लाने वाली सिद्ध हो सकती है। किताब आदमी की मित्र बन सकती है। नवकार महामंत्र का जप भी मित्र बना रहे। भाव शुद्ध रहें। (शेष पेज 14 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।